हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5113 हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। 2068 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सुगम गीता	3
दिन दर्शिका	4
श्री शिवकुमार गोयल को 'भानु प्रताप शुक्ल स्मृति राष्ट्रधर्म पुरस्कार'	4
संगठित न होने के कारण हिन्दू अपमानित	5
कर्मयोग	6
मुस्लिम आरक्षण के विरूद्ध ''हिन्दू रोटी एवं शिक्षा बचाओं आन्दोलन''	7
अपनी परम्परा और संस्कृति को......	10
पिछड़े वर्ग के अधिकारों पर डाका-डा. जैन	11
विश्व हिन्दू परिषद का प्रतिनिधि मण्डल...	12
सन्त श्री टेऊँराम जी महाराज	13
राम नाम महिमा	15
रक्तदान का आयोजन	15
स्वाध्याय, साधना आदि विचार	16
पाक हिन्दुओं को निकाला गया तो	17
हिन्दुओं का निबाला छीन कर मुसलमानों....	18
चुनाव सुधार की एक दिशा	19
सभी राष्ट्रवादी शक्तियाँ डॉ. स्वामी जी के साथ	20
झण्डेवाला मन्दिर में ध्यान-योग शिविर	20
सन्त एवं धर्माचार्य चिन्तन बैठक	21
स्वामी राघवानन्द के अमृत महोत्सव पर....	21
राष्ट्रधर्म पालन की सात्विक श्रद्धा	22
मजहब के आधार पर बांटना देश....	24
श्रद्धांजलि सभा	25
रामलला के दर्शनार्थियों से सभ्यव्यवहार किया जाय	26
मतान्तरण से राष्ट्रांतरण बढ़ता है इसे प्रतिबन्धित करें	26

त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः।।४/२०
निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्।।४/२१

जो मनुष्य संसार के आश्रय से रहित, सम्पूर्ण कर्मों और उनके फल में पूर्णरूप से अनासक्त होकर, परमात्मा में नित्य तृप्त है, वह अनेक कर्म भली प्रकार करता हुआ भी वास्तव में कुछ भी नहीं करता।

जिसने अपनी इन्द्रियों और अंतःकरण को भली प्रकार से वश में कर लिया है, तथा समस्त भोगों की सामग्री के संग्रह को त्याग दिया है, ऐसा आशारहित कर्मयोगी केवल शरीर सम्बन्धी कर्म करता हुआ भी पाप से मुक्त ही रहता है।

आशा इच्छा जब तक होतीं-तन मन इन्द्री स्ववश न होतीं
अंतःकरण शरीर इन्द्रियाँ-योगी के वश सभी वृत्तियाँ
आशा इच्छा और वासना-उसे न किंचित मात्र कामना
यदि कोई सामग्री रखता-सदुपयोग पर हित में करता
उतने मात्र कर्म हों उसके-शरीर का निर्वाह हो सके
सिद्ध निवृत्ति परायण रहता-पर आलस्य प्रमाद न करता
कर्तापन का भाव न होता-अतः कर्म बन्धन नहिं होता
कर्म शरीर हेतु भी करता-किन्तु पाप उसको नहिं लगता

दोहा-

कर्म और फल में नहीं, लेशमात्र आसक्त।
बिनु जग के आश्रय सदा, परमात्मा में तृप्त।।
सिद्ध पुरूष परहित जगत, यदपि करे सब कर्म।
वास्तव में फिर भी न वह, करता कोई कर्म।।

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से

लेखकः-**श्री प्यारे लाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लारेंस रोड,
केशवपुरम, दिल्ली-110035, दूरभाषः- 011-27192504

माघ शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् २०६८
२४ जनवरी से ७ फरवरी सन् २०१२ ई.

सूर्य उत्तरायण | शिशिर ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
मंगलवार	प्रतिपदा	श्रवण	११	24	पंचक प्रारम्भ
बुधवार	द्वितीया	धनिष्ठा	१२	25	बाबा लाल दयाल जयंती
गुरुवार	तृतीया	शतभिषा	१३	26	भारतीय गणतंत्र दिवस, वरद चतुर्थी व्रत
शुक्रवार	चतुर्थी	पूर्वाभाद्रपद	१४	27	
शनिवार	पंचमी	उत्तराभाद्रपद	१५	28	वसन्त पंचमी, सरस्वती पूजन, लाला लाजपतराय जयंती
रविवार	षष्ठी	रेवती	१६	29	पंचक समाप्त, शीतला षष्ठी
सोमवार	सप्तमी	अश्विनी	१७	30	आरोग्य सप्तमी, महात्मा गांधी पुण्य दिवस
मंगलवार	अष्टमी	भरणी	१८	31	श्री दुर्गाष्टमी
बुधवार	नवमी	कृतिका	१९	1 फरवरी	
गुरुवार	दशमी	कृतिका	२०	2	
शुक्रवार	एकादशी	रोहिणी	२१	3	जया एकादशी व्रत
शनिवार	द्वादशी	मृगशिरा	२२	4	भीष्म द्वादशी
रविवार	त्रयोदशी	आर्द्रा	२३	5	प्रदोष व्रत, गुरु हरराय जयंती
सोमवार	चतुदर्शी	पुनर्वसु	२४	6	श्री रामचरण स्नेही जयंती
मंगलवार	पूर्णिमा	पुष्य	२५	7	श्री रविदास जयंती, सत्यव्रत पूर्णिमा

श्री शिवकुमार गोयल को 'भानु प्रताप शुक्ल स्मृति राष्ट्रधर्म पुरस्कार'

लखनऊ। पत्रकार साहित्यकार शिवकुमार गोयल को 'भानुप्रताप शुक्ल स्मृति–राष्ट्रधर्म पुरस्कार' प्रदान किया गया। लखनऊ में आयोजित इस सम्मान समारोह में भाजपा के वरिष्ठ नेता अरुण जेटली व 'राष्ट्रधर्म' के सम्पादक आनन्द मिश्र 'अभय' द्वारा इक्कीस हजार रूपया तथा स्मृति चिह्न गोयल जी को दिया जाना था। श्री गोयल अस्वस्थता के कारण इसे ग्रहण करने लखनऊ नहीं जा पाए। उनके लखनऊ निवासी निकट सम्बन्धी हरिप्रकाश अग्रवाल ने उनकी जगह पुरस्कार ग्रहण किया। अनेक विशिष्ठ जनों ने शिवकुमार गोयल के साहित्य व पत्रकारिता में योगदान की सराहना की। प्रशस्ति पत्र में श्री गोयल जी की पचास वर्ष की पत्रकारिता व लेखन क्षेत्र में की गई सेवाओं का विस्तार से वर्णन किया गया।

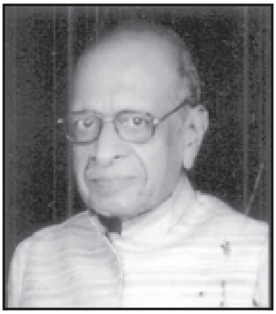

'राष्ट्रधर्म' के सम्पादक आनन्द मिश्र 'अभय' ने कहा कि शिवकुमार गोयल ने स्वाधीनता संग्राम के इतिहास लेखन पर जहाँ उल्लेखनीय कार्य किया वहीं राष्ट्र के विरुद्ध अलगाववादियों के षडयंत्र का लेखनी के माध्यम से भण्डाफोड़ करके पत्रकारिता का आदर्श उपस्थित किया है।

श्री पवनपुत्र बादल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

–दिनेश गुप्ता

संगठित न होने के कारण हिन्दू अपमानित

काटिगड़ा 25 दिसम्बर। विश्व हिन्दू परिषद के वरिष्ठ सलाहकार, पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल ने वराक घाटी में हिन्दू सम्मेलन में अपने उद्‌बोधन में कहा बराक उपत्यका आज अशान्त है– रक्तपात, अपहरण और बलात्कार की घटनायें यहाँ प्रतिदिन घटित हो रही हैं। इसी अशान्त बराकघाटी में शान्ति स्थापना के निमित्त काटिगड़ा में विश्व शान्ति यज्ञ एवं हिन्दू सम्मेलन सम्पन्न हो रहा है। हिन्दू समाज को संगठित होकर खड़ा करना ही इस सम्मेलन का उद्देश्य है।

देश 1947 में स्वाधीन हुआ। अनेक भाई–बहनों के बलिदानों के पश्चात् प्राप्त हुई स्वाधीनता के पश्चात् लोगों को विश्वास था कि स्वतंत्रता के बाद देश में शान्ति स्थापित होगी किन्तु स्वाधीनता के 64 वर्ष पश्चात् भी शान्ति तो दूर की बात है दिन पर दिन देश में अशान्ति बढ़ती जा रही है, माँ बहनों का अपमान, हत्या और अपहरण की घटनायें सीमा को लांघ रही हैं विशेषकर हिन्दुओं के ऊपर यह सब हो रहा है।

सरकारी नौकरी आदि क्षेत्रों में हिन्दुओं को रोका जा रहा है। जो सरकार शासन में है उनके द्वारा हिन्दुओं के साथ सौतेला व्यवहार हो रहा है। हिन्दुओं को बंगलादेशी कहकर पुन: बांग्लादेश भेजा जा रहा है। पूज्य साधू सन्तों को, संन्यासियों को कारावास में डाला जा रहा है। यह हिन्दुओं के लिए खतरे की घंटी है। इस सब से अपनी रक्षा के लिए हिन्दुओं को संगठित होने की आवश्यकता है।

साध्वी निरञ्जना ज्योति ने भी अपना विचार रखते हुए कहा कि वर्तमान भारत में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा एवं संरक्षण देने के लिए सरकार कमर कस कर बैठी है। राजीव गांधी की हत्या के अपराध में बन्दी निलीमा से सोनिया पुत्री प्रियंका जेल में मिलने के लिए जाने के पीछे क्या दर्शाता है? कोई गूढ़ रहस्य इसमें छिपा है?

बराकघाटी मे मुसलमान अल्पसंख्यक नहीं हैं वे यहाँ बहुसंख्यक हैं। ये यहाँ 60 प्रतिशत हैं। देश की स्वतंत्रता के समय इस्लाम धर्मावलम्बी मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बनाया गया। अब पुन: एक और विभाजन करना चाहते हैं।

बराकघाटी बंगलादेश की सीमा से लगी है। यहाँ सायंकाल 5 बजे सभी घरों के द्वार बन्द हो जाते हैं, यदि इसके पश्चात् द्वार खुले रहें तो यहाँ का पशुधन एवं महिलायें बंगलादेश की ओर उठालिये जाते हैं। इस निमित्त उत्तरदायी है U.P.A.की अध्यक्षा सोनिया गांधी और उनका मुसलिम प्रेम। आज महात्मा गांधी इस देश में आ जायें तो वह रामराज्य नहीं तो रावणराज्य ही इस देश में पायेंगें। साध्वी प्रज्ञा पिछले कई वर्षों से जेल में हैं। उन पर अत्याचार हो रहा है। सोनिया ताड़का, सुपर्नखा और पूतना जैसा व्यवहार कर रहीं हैं। स्मरण रखना होगा कि पूतना और सुपर्नखाओं को मारने के लिए भगवान कृष्ण और राम का जन्म इस देश में होता है।

हिन्दू सब समय ही अहिंसावादी रहा है, हिन्दू कभी भी हिंसा पर विश्वास नहीं करता। परिस्थिति के कारण यदि हिन्दू आतंकवादी हो गया तो संसार में आतंकवाद समाप्त हो जायेगा।

सरकार अल्पसंख्यकों के संरक्षण के लिए जो कानून बनाना चाहती है उससे हिन्दुओं का जीवनयापन कठिन हो जायेगा। इस अधिनियम से यदि सुरक्षा चाहते हैं तो हिन्दुओं को संगठित होना ही होगा। अन्य कोई मार्ग नहीं है। ❑

कर्मयोग

उपदेश सार, नामक अपने लघु परन्तु ज्ञान से परिपूर्ण ग्रन्थ के प्रारम्भ में भगवान रमण महर्षि का स्मरण कर उसे कर्मफलदाता सिद्ध कर मनुष्य के कर्तव्य के मिथ्याभिमान एवं कर्म की श्रेष्ठता व स्वतन्त्रता के भ्रम को दूर करते हैं।

कर्तुराज्ञया प्राप्यते फलम्।
कर्म किं परं कर्म तज्जड़म्॥१॥

(1) (जगत) कर्ता (ईश्वा) की आज्ञा से (नियमानुसार) कर्मफल प्राप्त होता है; तब क्या कर्म सर्वश्रेष्ठ (सत्य) हैं? (नहीं क्योंकि) वह कर्म जड़ है।

साधारणतः हम सोचते हैं कि मनुष्य अपनी इच्छा से प्रेरित होकर करण अर्थात् कर्म के साधन द्वारा क्रिया करके इष्ट फल को प्राप्त करता है, जैसे किसान हल इत्यादि द्वारा अनाज प्राप्त करता है। इसमें हमको ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। हम कर्म करते हैं और हमको फल प्राप्त होता है। क्या हमारी यह धारणा सही है? विचार करने पर हमें ज्ञात होगा कि यह धारणा भ्रामक है। किसी भी कर्म फल को प्राप्त करने के लिए कर्ता, करण और क्रिया की आवश्यकता होती है; किन्तु इनमें से कोई भी स्वतंत्र रूप से कर्मफल उत्पन्न नहीं कर सकता है, जैसे हल इत्यादि स्वयं क्रिया नहीं करने लगते। क्रिया का कर्ता से भिन्न अथवा उसके बिना कोई अस्तित्व भी नहीं है। यदि हम यह कहें कि यह कर्ता जीव ही कर्मफल को उत्पन्न करता है तो यह भी सही नहीं है क्योंकि यह कर्ता स्वयं देश, काल, प्रकृति के नियम इत्यादि कारणों से अनभिज्ञ है। उसी प्रकार यह जीव ही कर्मफल का उत्पादक होता तो उसे सदैव इष्टफल की ही प्राप्ति होती अनिष्ट की कभी नहीं, परन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं दिखाई देती है। इससे यह सिद्ध होता है कि कर्मफल प्रदान करने से इनसे भिन्न कोई शक्ति है, जिसे वेदान्त में ईश्वर कहते हैं। यही बात श्री रमण महर्षि बताते हैं। ईश्वर की आज्ञा से अर्थात् ईश्वरीय नियमों के अनुसार कर्मफल की प्राप्ति होती है।

ईश्वर के अस्तित्व को इस प्रकार सिद्ध किया जा सकता है। जितने भी प्राणी हैं उनका जन्म ऐसे जगत में हुआ है जो पहले से ही निर्मित था। किसी भी जीव ने न तो अपने आपको बनाया और न ही अपने जन्म के बाद इस जगत को बनाया। हमने अपने आपको देखने, सुनने, विचार करने इत्यादि शक्तियों से युक्त पाया। इन सबका कोई निर्माता होना ही चाहिए। क्योंकि बिना निर्माता के कोई भी निर्माण-कार्य नहीं हो सकता। इसी निर्माता को ईश्वर कहते हैं। वह सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान है, क्योंकि बिना ज्ञान और शक्ति के कोई निर्माण कार्य नहीं किया जा सकता है। मनुष्य केवल ईश्वर-प्रदत्त शक्तियों का उपयोग कर प्रकृति के नियमों को जानता है और उनका उपयोग जीवन को सुखी बनाने में करता है। वह कभी प्रकृति के नियमों के विरुद्ध नहीं जा सकता। यह सब कुछ देखते हुए भी यदि कोई ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता है, तो यह बड़े आश्चर्य की बात है।

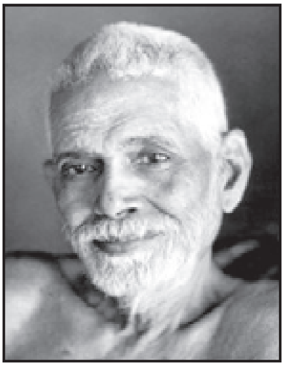

इस प्रकार यहाँ ईश्वर को कर्मफलदाता के रुप में सिद्ध किया गया है और न कि पक्षपातपूर्वक। इस श्लोक की दूसरी पंक्ति में यह सिद्ध किया गया है कि कर्म स्वयं जड़रूप होने से तथा कर्म से भिन्न उसका अस्तित्व ने होने से वह सर्वश्रेष्ठ नहीं हो सकता और न ही कर्म-फल प्रदान करने में वह स्वतंत्र रूप से समर्थ है। यहाँ पर जड़ शब्द से यह तात्पर्य है कि कर्म का चेतन जीव के बिना अस्तित्व नहीं है तथा कर्म को यह ज्ञान नहीं होता कि उसका (कर्म का) फल क्या होगा, जैसे कुल्हाड़ी से वृक्ष काट कर गिराया तो यह काटने की क्रिया यह नहीं जानती कि किसे गिराया है और क्यों गिराया है। कर्म के जडत्व का यह अभिप्राय है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कर्मफल प्राप्ति में ईश्वर की आवश्यकता है परन्तु यह सब जान कर मनुष्य स्वयं को कर्ता मानकर अभिमानी हो जाता है और जब अहंकार आता है तब वह स्वार्थ के लिए कर्म करता हुआ उसके दु:खदायी बंधनों में फंस जाता है।

अगले श्लोक में इसी तथ्य को स्पष्ट किया गया है।

कृतिमहोदधौ पतनकारणम्।

संकलन कर्ता-**श्री मोहन जोशी**

मुस्लिम आरक्षण के विरूद्ध ''हिन्दू रोटी एवं शिक्षा बचाओं आन्दोलन''

दिल्ली, 23 दिसम्बर, 2011, आनन-फानन में ओबीसी के 27 प्रतिशत आरक्षण में 4.5 प्रतिशत मुस्लिम आरक्षण की केन्द्र सरकार की घोषणा भारत की संविधान की हत्या एवं बहुसंख्यक हिन्दुओं के लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन है। डॉ. प्रवीण तोगडिया, विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष ने तत्कालिक प्रभाव से लोकतांत्रिक एवं शान्तिपूर्ण ''हिन्दू रोटी एंव शिक्षा बचाओ आन्दोलन'' की घोषणा की है।

जो मुसलमान परिवार नियोजन का पालन नहीं करते हैं उनके सामने सरकार ने मुस्लिम वोट बैंक के कारण घुटने टेक दिये हैं। 27 प्रतिशत ओबीसी के आरक्षण में से 4.5 प्रतिशत मुसलमानों को आरक्षण देकर सरकार ने गरीब और जिनको जरूरत थी ऐसी ओबीसी की शिक्षा, नौकरी, बैंक लोन और अन्य सुविधा छीन ली है। यह बात यहाँ तक नहीं रूकेगी। अब अनुसूचित जाति के आरक्षण में से भी मुसलमान ईसाईयों को आरक्षण दिया जायेगा। अनुसूचित जनजाति का आरक्षण तो ईसाई को मिल ही रहा है। मुस्लिम वोट बैंक के सामने घुटने टेककर, भारत के संविधान में संशोधन करके मजहब के आधार पर आरक्षण दे देगे और ओपन मेरिट कैटेगिरी के हिन्दुओं की शिक्षा और रोजगार छीन लेगे।

विश्व हिन्दू परिषद मांग करती है कि ओबीसी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और नोमेडिक ट्राइब में से कहीं पर भी मुसलमान ईसाईयों को आरक्षण दिया गया उसे तत्काल वापस लिया जाय। विश्व हिन्दू परिषद सरकार को चेतावनी दे रही है कि संविधान में संशोधन करके मजहब के आधार पर मुस्लिम आरक्षण देकर ओपन मेरिट कैटेगिरी का अधिकार छीनने का दु:साहस न करे। कुछ तथाकथित मुस्लिम जातियां ओबीसी सूची में सम्मिलित होकर आरक्षण का लाभ ले रही हैं उनको तत्काल ओबीसी सूची से हटाया जाय। प्रधानमंत्री, कानून मंत्री केन्द्र सरकार, कुछ राज्य सरकार एवं मुसलमानों के अपर्याप्त आकड़ों के आधार पर मुसलमान ईसाई गरीब हैं इसलिए उनको विशेष सुविधा आरक्षण देने का सुझाव देने वाले जस्टिस राजेन्द्र सच्चर कमेटी एवं जस्टिस मिश्र कमिशन के रिपोर्ट को अस्वीकार किया जाय।

विश्व हिन्दू परिषद किसी भी कीमत पर अनुसूचित जाति का आरक्षण ईसाई को नहीं देने देंगे।

विश्व हिन्दू परिषद हिन्दू रोटी और शिक्षा बचाओ आन्दोलन की घोषणा करती है और जब तक यह असंवैधानिक एवं हिन्दू समाज और लोकतंत्र का हनन करने वाला निर्णय सरकार वापस लेकर जनता से माफी नहीं मांगती तब तक यह आन्दोलन जारी रहेगा।

विहिप चेतावनी देती है कि भारत के संविधान के विरूद्ध मजहब के आधार पर आरक्षण की मांग करने वाले या लेने वाले मुसलमान और ईसाई और उनको समर्थन देने वाले राजनैतिक दलों को हिन्दुओं को आनेवाले चुनाव में लोकतांत्रिक प्रतिकार के लिए तैयार रहना होगा।

विहिप मांग करती है कि मजहब के आधार पर आरक्षण की मांग करने वाले, आरक्षण देने वाले उनको समर्थन देने वाले राजनैतिक दल असंवैधानिक कार्य कर रहे हैं इसलिए उन पर देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करके दंड दिया जाय।

डॉ. तोगडिया देश के सभी हिन्दुओं को जाति, विरादरी, भाषा प्रांत से ऊपर उठकर इस षडयंत्र के विरूद्ध एक होकर लोकतांत्रिक संघर्ष के लिए आह्वान करती है। हमने यह नहीं किया तो हिन्दू और भारत का लोकतंत्र समाप्त हो जायेगा। हम हिन्दुओं से आह्वान करते हैं कि हिन्दू रोटी और शिक्षा बचाओ आन्दोलन को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन करें।

किसी भी कीमत पर मुसलमानों को हिन्दुओं की नौकरी और शिक्षा देने नहीं देंगे केन्द्र सरकार की कैबिनेट ने 27 प्रतिशत ओ.बी.सी के आरक्षण में से 4.5 प्रतिशत आरक्षण मुसलमानों को देने की घोषणा की है यह भारत में हिन्दुओं के सर्वनाश का प्रारम्भ है।

– हम किसी भी कीमत पर मुसलमान या ईसाईयों को हिन्दुओं के-ओ.बी.सी., एस.सी., एस.टी या ओपन कैटेगिरी की नौकरी या शिक्षा नहीं देने देंगे।

– आज मुस्लिम वोट बैंक के सहारे मुसलमान ओ. बी.सी की रोजी-रोटी, नौकरी, शिक्षा, बैंकलोन इत्यादि

छीन रहे है। कल अनुसूचित जाति की यह सब चीजें ईसाईयों को दे देंगे। अनुसूचित जनजाति का आरक्षण का लाभ ईसाई ले ही रहे हैं और भारत का संविधान मजहब के आधार पर आरक्षण की अनुमति नहीं देता है इसलिए संविधान में संशोधन करके ओपन कैटेगिरी के हिन्दुओं की रोजगार और शिक्षा छीन लेंगे। आज ओबीसी हिन्दू से छीन रहे हैं कल एस.टी, एस.सी और ओपन मेरीट के हिन्दुओं की भी छीन लेंगे।

– मजहब के आधार पर आरक्षण भारत के संविधान ने मान्य नहीं किया है। मुस्लिम वोट बैंक के आधार पर लोकतंत्र को अपने लाभ में उपयोग करके संविधान के निर्माता बाबा साहेब अम्बेडकर एवं संविधान की हत्या कर रहे हैं। देश और हिन्दुओं के विरूद्ध यह षड्यंत्र बिना विरोध के आगे बढता रहेगा तो मुस्लिम वोट बैंक के सामने घुटने टेककर भारत का संविधान परिवर्तन करके साहबानों केस की भांति मुसलमानों को मजहब के आधार पर आरक्षण दे देंगे।

– यही प्रक्रिया मुस्लिम वोट बैंक को लोकतंत्र का दुरूपयोग करके भारत के विरूद्ध ही अपनी मांग रखकर आरक्षित मतदाता संघ, आरक्षित जिला (मल्लापुरम, मेवात) आरक्षित क्षेत्र (ऐसे अनेक मिनी पाकिस्तान देश में खड़े हो रहे हैं), आरक्षित उद्योग, व्यापार, आरक्षित मुस्लिम इन्डैक्स, आरक्षित मुस्लिम बैंक, जो भारत को पाकिस्तान बनाकर हिन्दू और हिन्दुओं के कारण जो लोंकतंत्र है उसको समाप्त कर देंगे।

हमारी मांग–

01. सरकार तत्काल सभी प्रकार का मुस्लिम और ईसाई आरक्षण वापस लें, आन्ध्र, केरल, तमिलनाडु प्रदेशों से भी मुस्लिम–ईसाई आरक्षण वापस लें और अभी जो केन्द्र सरकार ने ओबीसी के 27 प्रतिशत में से 4.5 प्रतिशत दिया है वह भी वापस लें।

02. भारत के संविधान को अपमानित करके मजहब आधारित आरक्षण देने के लिए सरकार जनता से माफी मांगे।

03. देश के मुसलमान कानून मंत्री, प्रधानमंत्री एवं केन्द्र, राज्य सरकारों के अपूर्ण अपर्याप्त जानकारी के आधार पर मुसलमान गरीब है और इसलिए उनको विशेष सुविधा एवं आरक्षण देना चाहिए ऐसा गलत निष्कर्ष निकालने वाले जस्टिस राजेन्द्र सच्चर कमेटी एवं जस्टिस रंगनाथ मिश्र कमीशन के रिपोर्ट को पूर्णतया अस्वीकार किया जाय।

04. सरकार देश को वचन दे कि वह अनुसूचित जाति के आरक्षण में मुसलमान और ईसाई को सम्मिलित नहीं करेंगे।

05. अनुसूचित जनजाति के आरक्षण के लिस्ट में सम्मिलित ईसाईयों को तत्काल आरक्षण सूची से हटाया जाय।

06. मुसलमानों की तथाकथित जो भी जातियां इस समय आरक्षण का लाभ ले रही है उनको तत्काल आरक्षण सूची से हटाया जाय क्योंकि इस्लाम में जाति हैं ही नहीं और भारत में आरक्षण सिर्फ हिन्दू जातियों को ही दिया गया है।

07 भारत का संविधान मजहब के आधार पर आरक्षण मान्य नहीं करता है इसलिए मजहब के आधार पर आरक्षण की मांग करने वाले, इसके लिए भारत का संविधान संशोधन की मांग करने वाले, वचन देने वाले और ऐसा आरक्षण देने वाले सबके विरूद्ध देशद्रोह का मुकदमा करके उनको दंड दिया जाय।

सरकार जनता को सार्वजनिक वादा करे कि मजहब के आधार पर आरक्षण के लिए संविधान संशोधन नहीं करेंगे।

कुछ महत्व के बिन्दु–

– भारत की संविधान सभा में मजहब के आधार पर आरक्षण के विषय पर पर्याप्त चर्चा हुई और चर्चा के बाद पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल सबने मजहब के आधार पर आरक्षण नहीं देनें का निर्णय किया।

– भारत का संविधान स्वीकृत होने के बाद तुरन्त 1950 में सर्वोच्च न्यायलय न स्टेट आफॅ चेन्नई वर्सीस चम्पाकरण केस में मजहब के आधार पर आरक्षण अमान्य किया। इलाहाबाद एवं हैदराबाद हाईकोर्ट ने भी मजहब के आधार पर मुसलमानों के आरक्षण को अमान्य किया।

– यदि मुसलमान गरीब है तो भी उसके लिए हिन्दू कैसे जिम्मेदार? मुसलमान मजहब के नाम पर एक से ज्यादा पत्नी, अनेक बच्चे पैदा करके मदरसों का शिक्षण लेकर, भारत की जनसंख्या बढाकर, खुद गरीब रहकर, देश

को गरीब बनाता है ताकि मुसलमान अपनी जनसंख्या बढाकर लोकतांत्रिक पद्धति से भारत पर कब्जा करे। बहुसंख्यक हिन्दुओं का अधिकार छीन लें और अंत में लोकतंत्र का भी नाश करे। हिन्दू परिवार नियोजन का पालन करके आधुनिक शिक्षा लेकर, देश की जनसंख्या सीमित रखकर, देश का विकास कर रहा है। उनको पुरस्कार देने की जगह हिन्दुओं की रोजी रोटी छीनकर मुसलमानों को नौकरी, शिक्षा, बैंक लोन और ऐसी विशेष सुविधा क्यों दी जाय? हिन्दू भारत के अर्थतंत्र को आगे ले जा रहा है मुसलमान अर्थतंत्र पर बोझ बन रहा है फिर भी हिन्दुओं की नौकरी, शिक्षा, बैंक लोन और टैक्स के आधार पर मुसलमानों को असंवैधानिक फायदा देने का कारण क्या?

– यह जहरीला चक्र ऐसे ही आगे ही बढ रहा जैसे 47 के पहले आगे बढ रहा था। यह हिन्दुओं के विरूद्ध मुस्लिम वोट बैंक का डायरेक्ट एक्सन (जिन्ना) है जिसमें सरकार ओर मुसलमानों ने हाथ मिलाये हैं। अब ओबीसी में से मुसलमानों का आरक्षण, बाद में अनुसूचित जाति में से ईसाई को, उसके पश्चात संविधान संशोधन करके ओपन मेरिट के हिन्दुओं का रोजगार छीनना यह आरक्षण जिहाद है। यही प्रकिया आगे जाकर आरक्षित मजहबी मतदाता संघ, मुस्लिम –ईसाई आरक्षण। भारत में नये पाकिस्तान का पुर्नजन्म।

– भारत में हिन्दुओं के उदारमतवादी सभ्यता के कारण लोकतंत्र और मुसलमानों को लोकतांत्रिक मताधिकार, समान अधिकार दिया है। मुसलमानों ने मुस्लिम वोट बैंक बनाकर सरकार को घुटने टेकने के लिए मजबूर बनाकर असंवैधानिक मांगे मनवाने का काम किया है उस स्थिति में ''हमारे लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों का उपयोग करके मुसलमान वोट बैंक हमार लोकतंत्र और उदारमन वाली जीवन शैली को समाप्त कर रहे हैं।'' मुसलमानों को लोकतांत्रिक अधिकार के बारे में ही हिन्दुओं को पुनः विचार करना होगा।

– अब समय आ गया है कि विरादरी, प्रान्त और भाषा से ऊपर उठकर सभी हिन्दू एक होकर खड़े रहे यह षडयंत्र को पराजित करें, वरना पृथ्वी पर हिन्दू नाम समाप्त हो जायेगी।

विश्व हिन्दू परिषद ''हिन्दू रोटी एवं शिक्षा बचाओं आन्दोलन'' की घोषणा करती है।

– ''मुस्लिम आरक्षण वापस लो बाद में ही हिन्दुओं को वोट मांगो।'' यह वाक्य आन्दोलन का सूत्र होगा।

– यह आन्दोलन जब तक मुस्लिम आरक्षण वापस लेकर सरकार जनता से माफी न मांग तब तक जारी रहेगा।

– डॉ. प्रवीण तोगडिया

अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष–विश्व हिन्दू परिषद

लोहड़ी, मकर संक्रान्ति व गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभाकामनाएं

कृष्णा घी स्टोर

दूरभाष : 23611039
मोबाईल : 9868307125

(शुद्ध देसी घी के विक्रेता)

बिहारी लाल सतीश कुमार बत्रा

(लायपुर वाले)

5229, बारा टूटी चौक, सदर थाना रोड, सदर बाजार, दिल्ली–110006

Vijay Kr. Sanghi
9810088805

With Best Compliments of Makar Sankranti

Nishant Sanghi
9810738039

Hilife

sea star

RadhikaTraders

5733, Factory Road, Nabi Karim, New Delhi-110055
Tel.: 23549877, 23502300, 23670283 Telefax: 23549877
(R) (V.K.) 22231396 (N.S.) 43045206 E-mail: radhikatraders@bol.netin

अपनी परम्परा और संस्कृति को छोड़ने से विश्व के मानचित्र से हिन्दू समाप्त हो जायेगा

-श्री चम्पत राय

अयोध्या 4 जनवरी। हिन्दू समाज अपने मान बिन्दुओं के सम्मान की लड़ाई लगातार सैकड़ों वर्षो से लड़ता आ रहा है। संतों का मंत्र और विहिप का तंत्र सदैव अपने धार्मिक मानबिन्दुओं की रक्षा के लिए तत्पर रहा है। हिन्दू अगर अपनी परम्परा और संस्कृति को छोड़ देगा तो विश्व के मानचित्र से समाप्त हो जायेगा। इसलिए अपनी परम्परा, संस्कृति को बचाने के लिए संघर्ष तो करना ही पडेगा। यह विचार विश्व हिन्दू परिषद के नवनियुक्त अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री चम्पत राय ने जानकीघाट स्थित सर्वभौम दार्शनिक आश्रम में अयोध्या के संत धर्माचार्यों के बीच व्यक्त किया।

श्रीराय संत-धर्माचार्यों के बीच आशीर्वाद हेतु उपस्थित थे। इस अवसर पर संतों की बैठक आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता मणिराम छावनी के उत्तराधिकारी महंत कमलनयनदास महाराज ने की। इस अवसर पर संतो के बीच श्री राय ने कहा श्रीराम जन्मभूमि पर किए गए उत्खनन मे प्राप्त अवशेष और कई प्रकार से तथ्य हिन्दू समाज के विश्वास को बल प्रदान करने वाले है। उन्होंने कहा समाज को जोड़ने के लिए विश्व हिन्दू परिषद ने सदैव संत-धर्माचार्यों के नेतृत्व में अनेक प्रकार के राष्ट्रव्यापी अभियान चलाये। आज श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए सम्पूर्ण हिन्दू समाज उनके नेतृत्व में संकल्पबद्ध है। उन्होंने कहा अयोध्या ने सदैव असत्य पर विजय प्राप्त किया है यह भगवान श्रीराम की जन्मभूमि है। इसे हम अब गुलाम नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा हम कागज के टुकड़े पर हस्ताक्षर कर नागरिक नहीं बने हैं बल्कि यह धरती हमारी माँ है और प्रभु श्रीराम हमारे आराध्य।

उन्होने केन्द्र सरकार द्वारा 27 प्रतिशत ओबीसी के आरक्षण में से 4.5 प्रतिशत मुसलमानों को आरक्षण दिए जाने की घोषणा को तुष्टिकरण की पराकाष्ठा बताते हुए कहा मुस्लिम वोट बैंक के सामने नतमस्तक कांग्रेस सरकार विभाजन की नीव खोद रही है। इससे हमें सावधान रहने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा इस पर राष्ट्रव्यापी जनजागरण अभियान चलाया जायेगा।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महंत कमलनयनदास ने कहा विश्व हिन्दू परिषद ने सदैव लक्ष्य भेदी कार्यकर्ताओं के माध्यम से समाज की समस्याओं का समाधान किया है। श्रीराय अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री के दायित्व का निर्वाहन करते हुए देश की वर्तमान समस्याओं पर मुखर होंगे। उन्होंने कहा राष्ट्र आज क्षेत्रवाद, जातिवाद से जुझ ही रहा है अब अन्तर्राष्ट्रीय षडयंत्र के तहत मुगलिस्तान और इसाईलैण्ड जैसे समस्याओं से भी दो-चार होना पड़ेगा। संत धर्माचार्यों तथा विश्व हिन्दू परिषद ने धार्मिक मानबिन्दुओं के साथ ही राष्ट्रव्यापी समस्याओं के निराकरण के लिए सदैव जन जागरण किया है। 4.5 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा विष के समान होगी।

बैठक को महंत कन्हैया दास, महंत गोविन्द दास, महंत नृसिंह दास, महंत जर्नादन दास, महंत अवध किशोर दास, महंत रामशंकरदास, स्वामी विजयानन्द गिरि, डा. राघवेशदास वेदान्ती, महंत रामबालकदास, मनी राम दास, महंत राम मिलन दास, रामायणी रामकृपालदास, रामायणी रामशंकरदास, महंत रामसेवकदास, महंत जानकी घाट, जयपुर मंदिर के महंत, महंत बृजमोहनदास, मंहत पवनदास, महानगर संयोजक राजूदास आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए इस अवसर पर कारसेवकपुरम् प्रभारी प्रकाश अवस्थी, सुरेन्द्र सिंह, गया प्रसाद, राजेश, विजय, डा. हरीभान, शशि भूषण त्रिपाठी, दीपक ओझा आदि उपस्थित थे।

पिछड़े वर्ग के अधिकारों पर डाका-डॉ. जैन

हिसार 24 दिसंबर। विश्व हिन्दु परिषद् के केंद्रीय मंत्री और राष्ट्रीय प्रवक्ता डा. सुरेंद्र कुमार जैन ने कहा कि कुर्सी की लालसा में देश का विभाजन करने वाली कांग्रेस ने अपने युवराज के राज्याभिषेक के उतावलेपन में मुसलमानों को धार्मिक आधार पर आरक्षण देकर देश में एक और विभाजन की नींव डाली है।

डा. जैन ने शनिवार को भारत माता मंदिर में पत्रकारों से वार्ता करते रहे थे। इस मौके पर उनके साथ विहिप के प्रांतीय उपाध्यक्ष प्यारे लाल लाहौरिया तथा प्रंतीय मीडिया प्रभारी विजय शर्मा मौजूद थे।

उन्होंने 22 दिसबंर 2011 की रात्रि को मुस्लिम समाज को 4.5 प्रतिशत आरक्षण देने के कार्यकारी आदेश को देश के लिए घातक बताते हुए कहा कि इस रात्रि को देश के इतिहास में काली रात के रूप में याद किया जायेगा। यह आदेश न केवल संविधान विरोधी है अपितु देश विरोधी भी है क्योंकि इसके कारण समाज के विभिन्न वर्गो में न केवल वैमनस्य बढ़ेगा अपितु मुस्लिम समाज में अलगाव की भावना और बलवती हो जायेगी।

डा. जैन ने कहा कि धार्मिक आधार पर यह आरक्षण पिछड़े वर्गो के अधिकारों पर खुला डाका है। मंडल कमीशन द्वारा चिंहित की गई तथाकथित पिछड़ी मुस्लिम जातियों के आधार पर उन्हें लगभग 3 प्रतिशत आरक्षण पहले ही मिल रहा था, अब यह 4.5 प्रतिशत नहीं 7.5 प्रतिशत से भी ज्यादा हो जायेगा जिसके कारण पिछड़े वर्ग के युवकों को नौकरियां लेने के लिये दर-दर की ठोकरें खानी पड़ेगी। उनकी रोजी-रोटी छीन कर चन्द वोटों के लालच में मुस्लिम युवकों को दी जा रही हैं। इस आरक्षण का प्रभाव केवल उनकी रोजी-रोटी पर ही नहीं उनकी शिक्षा पर भी पड़ेगा। यह आरक्षण शैक्षणिक संस्थाओं में भी मिलेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर सीमित हो जायेंगे। भारत की सभी संस्थाओं में पिछड़े वर्ग को मिलने वाला आरक्षण मुस्लिम संस्थाओं में नहीं मिलता तो पिछड़े वर्ग के लिये आरक्षित नौकरियों को उनसे छीनकर मुस्लिम समाज को कैसे दिया जा सकता है यह भेदभाव पिछड़े वर्ग में गहरा असंतोष निर्माण करेगा जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें सड़क पर उतरने के लिये विवश होना पड़ेगा।

डा. जैन ने बताया कि देश को बांटने के लिय जब अंग्रेजों ने 'कम्यूनल अवार्ड' की घोषणा की थी तब महात्मा गांधी ने उसे देश की एकता के लिये खतरनाक बताते हुए इसका विरोध किया था। भारत की संविधान सभा में जब धर्म पर आधारित आरक्षण का विषय विचार के लिये आया तब जवाहरलाल नेहरू ने यह कहते हुए इसका विरोध किया था कि यह देश को महाविनाश की ओर ले जायेगा। संविधान निर्माता डा. भीम राव अम्बेडकर ने इस विचार को विभाजनकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने वाला बताया। संविधान सभा की सलाहकार समिति जिसमें अब्दुल कलाम आजाद के अतिरिक्त इसाई प्रतिनिधि भी थे ने सर्वसम्मति से इस देश घातक विचार का विरोध किया था। परन्तु अब दुर्भाग्य से 'गांधी' के उपनाम का दुरुपयोग करने वाली तथा स्व. नेहरू जी की नातिन बहु सोनिया गांधी ने महापुरुषों की चेतावनी को दर किनारे कर पांच राज्यों में होने वाले चुनावों में विजय प्राप्त करने की लालसा में इस विध्वंसक कदम को उठाया है।

विहिप नेता ने उपरोक्त कार्यकारी आदेश को संसद की अवमानना भी बताया। जब संसद चल रही हो तो इस महत्वपूर्ण विषय पर देश के सर्वोच्च सदन में चर्चा करने की जगह इसे कार्यकारी आदेश द्वारा लागू करने से कांग्रेस की बदनीयती स्पष्ट हो जाती है। कांग्रेस के कई नेताओं ने इस आरक्षण के लिये राजेन्द्र सच्चर की अनुशंसाओं का हवाला दिया। आज यह सर्वविदित है कि राजेन्द्र सच्चर भी आई.एस.आई. के कुख्यात एजेंट डा. गुलाम नबी फाई से सुविधाएं प्राप्त करते थे और उनके स्वरों को आवाज देते थे। राजेन्द्र सच्चर ने सेना में भी धर्म के आधार पर गणना करने का

देशघातक सुझाव दिया था जिसे तत्कालीन सेनाध्यक्ष के दृढ़ विरोध के कारण लागू नहीं किया जा सका था। अब यह बात पूरे देश को समझ में आ रही है कि सच्चर ने मुस्लिम समाज को पिछड़ा बताकर आरक्षण देने का सुझाव देश के किन दुश्मनों के इशारे पर दिया होगा। डा. जैन ने चेतावनी देते हुए कहा कि इस आदेश के बाद अब सेना और न्यायपालिका में भी मुस्लिम समाज के आरक्षण की मांग बलवती होगी जिसे सोनिया जी बड़ी तत्परता से स्वीकार कर लेंगी।

विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा अधिनियम के बाद मुस्लिम समाज के लिये आरक्षण देश की एकता, अखंडता एवं संप्रभुता के लिये खतरे की घंटी है। इन देशघाती कदमों को कोई भी देशभक्त नागरिक स्वीकार नहीं कर सकता है। इन्होंने सरकार को चेतावनी दी कि वे इन देशघाती कदमों को वापस लेकर देश की जनता से क्षमा मांगे अन्यथा देश की जनता का आक्रोश सरकार को भारी पड़ सकता है। डा. जैन ने इन दोनों षडयंत्रों के विरोध में देशव्यापी प्रबल आंदोलन की घोषणा करते हुए बताया कि जनवरी माह में छोटी बड़ी सभाओं के द्वारा व्यापक जनजागरण करते हुए इस अधिनियम व आदेश की प्रतियां जलायी जायेंगे और जनवरी के अंत में जिलाधीशों के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया जायेगा। इसके बाद भी अगर सरकार अपने कुत्सित इरादों में पीछे नहीं हटी तो अप्रैल के प्रारम्भ में दिल्ली में एक विराट रैली का आयोजन किया जायेगा जिसमें दशभर के लाखों देशभक्त दिल्ली आकर अपना आक्रोश व्यक्त करेंगे। डा. जैन ने सरकार से आग्रह किया कि वे देशहित में पुनर्विचार करें और देश की जनता को सड़कों पर उतरने के लिये मजबूर न करे। इस अवसर पर जिला मीडिया प्रभारी रामचंद्र गुप्ता, विभाग मंत्री अनिल गोयल मौजूद थे। ❑

विश्व हिन्दू परिषद का प्रतिनिधि मण्डल मुख्य चुनाव आयुक्त से मिला

नई दिल्ली दिसम्बर 29, 2011। विश्व हिन्दू परिषद के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल ने मुख्य चुनाव आयुक्त से भेंट कर यूपीए सरकार द्वारा हाल ही में घोषित आरक्षण को समाप्त कर धार्मिक आधार पर वोटरों को लुभाने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को आगामी विधान सभा के चुनावों से दूर रखने की मांग की है। विहिप के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश सिंहल, नव नियुक्त महामंत्री श्री चंपत राय तथा केन्द्रीय मंत्री डा. सुरेन्द्र जैन ने चुनाव आयुक्त से कहा है कि सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी ने चुनाव घोषणा से ठीक पूर्व जिस प्रकार धार्मिक आधार पर वोटरों को लुभाने का अपराध किया है वह न सिर्फ संविधान के अनुच्छेद 15(1) व 16(2) में प्रतिबन्धित है बल्कि अनुच्छेद 15(4) व 16(4) का उल्लंघन भी है। विहिप पदाधिकारियों ने कहा कि इस आरक्षण से देश के एक और विभाजन की नींव रखी जाएगी। अत: इस सरकारी आदेश को अविलम्ब वापिस लिया जाए।

विहिप के प्रतिनिधि मण्डल ने चुनाव आयुक्त को उसके 1999 के आदेश का स्मरण भी कराया जिसके अन्तर्गत चुनाव आयोग ने शिव सेना प्रमुख श्री बाल ठाकरे को सन् 2005 तक के लिए चुनाव लड़ने और यहां तक कि उनको मताधिकार से भी वंचित कर दिया था।

विश्व हिन्दू परिषद ने चुनाव आयुक्त से कहा है कि यूपीए सरकार ने चुनाव घोषणा से ठीक दो दिन पूर्व ओबीसी के 27 प्रतिशत आरक्षण में से साढ़े चार प्रतिशत अल्पसंख्यकों को देकर धार्मिक आधार पर वोटरों को लुभाने तथा देश के एक और विभाजन की नींव रखी है। अत: इस आदेश को न सिर्फ तुरन्त वापस लिया जाए बल्कि इसके कारण आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की दोषी सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी को आगामी चुनावों से अयोग्य घोषित किया जाए।

प्रेषक–**विनोद बंसल**
विश्व हिन्दू परिषद, 9810949109

प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक
सन्त श्री टेऊँराम जी महाराज

यह संसार नश्वर है। पुरोदृश्यमान वस्तुओं में चेतन-अचेतन सब नाशवान् हैं। यह जगत् भगवान् की विचित्र लीलाओं का एक रंगमंच हैं, हम सामान्य जन अपनी-अपनी भूमिका निभाते है और अभिनय समाप्त होने पर अदृश्य हो जाते हैं। किन्तु इसी बहुविध विविधताओं और द्वन्द्वों से आप्लावित नि:सार संसार की सारता और परमोपयोगिता को सिद्ध करने के लिये समय-समय पर महाविभूतियों का अवतरण और आविर्भाव होता है। वे अपने जीवन से, कर्म से, व्यवहार से और ज्ञान से सांसारिक लोगों को क्रिया प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करते हैं। ऐसी ही एक महानीय, माननीय शिष्ट-विशिष्ट, वरिष्ट विभूति का आषाढ़ शुक्ल षष्ठी शनिवार संवत् 1944 सन् (6 जून 1887) को अवतार हुआ। विलक्षण-लक्षणों से सम्पन्न शैशवकाल से ही अलौकिक विद्याविज्ञ एवं असाधारण क्रियावान् इस महापुरुष का लोकोद्धार कार्य बाल्यावस्था से ही प्रारम्भ हो गया था। लोकोत्तरगुण गरिमा से गरिष्ठ महात्माओं का आयु से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

भारतवर्ष का यह परम सौभाग्य है कि यहाँ परम पिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से परम सिद्ध संतों और ईश्वर के अंशभूत अवतारों का प्रादुर्भाव होता है। संत श्री टेऊँराम जी इसी संत परम्परा की परम कल्याणकारिणी पंक्ति की प्रतिष्ठित प्रतिमा है। भारत के इतिहास का भक्तिकालीन युग स्वर्णाक्षरों से लिखने योग्य है। इस युग के कबीर, रहीम, रैदास, रसखान, मीरा, केशवदास, गुरुनानक आदि अनेक देदीप्यमान नक्षत्र थे, जो अपनी भक्ति से उस ईश्वरीय शक्ति की अभिव्यक्ति सरस और सरल काव्यों, दोहों और पद्यों के माध्यम से कर सके थे। बीसवीं शताब्दी में भक्ति के विशाल व्योम में संत श्री स्वामी टेऊँराम महाराज जैसे तेज पुंज मण्डित नक्षत्र का उदय हुआ और उन्होंने सत्संग की पावन मन्दाकिनी से लौकिक दु:खों से पीड़ित जनों के सन्ताप नाश का परमोपकारी कार्य का शुभारम्भ किया। सांसारिक लोग अज्ञान से ग्रस्त होने के कारण अपने जीवन के परम लक्ष्य को भूल जाते है और नाशवान् वस्तुओं की प्राप्ति और सुरक्षा में ही अपनी अमूल्य शक्ति को समाप्त कर जन्म-मरण के चक्र में बंधे रहते है। महात्मा और सन्त सत्य के प्रतीक है, वे अन्तिम सत्य की प्रतिमूर्ति हैं। संसारी लोगों की इस अवस्था और दयनीय दशा को देखकर उनकी कारुणिक भावना, हम लोगों की पीड़ा को दूर करने के उपाय बतलाती है।

सन्त टेऊँराम जी ने इसी लक्ष्य की सिद्धि के लिये एक सन्त मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम 'प्रेम प्रकाश मण्डल' रखा गया। यह सन्त मण्डल सत्य का उपदेश देता हुआ मनुष्य को उसके जीवन के वास्तविक उद्देश्य से परिचित करता था। हम साधारण जन विस्मृति के अधीन है। विस्मरण हमारा स्वभाव है। यही सोचकर साधु, संत और महापुरुष हमें समय-समय पर उनके दिव्य उपदेशों से भवरोग मुक्त करते हैं। सन्तों की प्रवृत्ति कोमल होती है। अत: हमारे द्वारा बार-बार अक्षम्य त्रुटियाँ हो जाने पर भी, वे पुन: सत्य के मार्ग का उपदेश करते हैं। सर्वत्र सत्य का प्रचार करते हुए स्वामी जी ने सिन्ध प्रान्त के नवाबशाह जिले के टन्डा आदम शहर के दक्षिण में एक पावन तपोमय वन में 'श्री अमरापुर स्थान' की स्थापना की। इस आश्रम में 20-25 पर्ण कुटिया व सत्संग स्थल का निर्माण किया। स्वामी जी ने 'सत्नाम साक्षी' के परम पवित्र मन्त्र से प्रेमियों को दीक्षित किया तथा इस मन्त्र को आत्मसात् करने का उपदेश दिया।

बिनु सत्संग विवेक न होई इस सिद्धान्त और अटल नियम का स्मरण कर संत श्री ने सत्संग की महिमा को उजागर किया। सत्संग सांसारिक विषय वासना को दूर कर परम सत्य की ओर उन्मुख करता है। विवेक को जागृत करता है। सत्संग के प्रभाव से अज्ञान का नाश होता है और अज्ञान के नाश होने पर मोक्ष का मार्ग दिखाई देने

लगता है। वेदान्त के सिद्धान्तानुसार यह संसार असत् है-

यथा रज्जु परित्यज्य सर्प गृछाति वैभ्रमात्।
तद्वत् सत्यम विज्ञाय जगत् पश्यति मून्धी।

जैसे रस्सी में सर्प का भाव और शूक्ति में रजत (चाँदी) का ज्ञान होता है उसी प्रकार मूढ़ बुद्धिजन इस संसार को ही सत्य मानते है। किन्तु वास्तव में तो यह भ्रम है। असत्य है। इस परम सत्य का ज्ञान ही सत्संग का उद्देश्य है। सद्गुरु जी ने इसी सत्य का उपदेश इस प्रकार किया है :-

सुन्दर देह को देख न फूलों, इक दिन ये जर जायेगी।
माया का अभिमान तजो, यह अन्त काम नहीं आयेगी॥

सन्त श्री टेऊँराम जी का मौलिक चिन्तन और दर्शन उनके सत्संग प्रवचनों और रचनाओं में प्रकाशित हुआ है। 'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ' एक विशालकाय आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थ है जिसका विषय विभाग व्यापक हैं। इसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली और छन्दावली आदि है। रामचरितमानस के रचयिता भक्त शिरोमणि तुलसीदास जी समान ही सद्गुरु जी की कवितावली और छन्दावली भक्ति रस से ओत-प्रोत और उपदेश की अपूर्व कृतियां कही जा सकती है। सद्गुरु जी के स्वरचित भजन 'अमरापुर वाणी' में संकलित है जो सरस पदावली के कारण जनसामान्य को उपदिष्ट कर रहे हैं। भगवान् प्रेम के वशीभूत होकर प्राणी का उद्धार करते हैं-इसी प्रेम ने भगवान को कर्मा बाई के घर बुलाया तो कभी शबरी ने झूठे बेर खिलाये।

''कर्मा कुब्जा भीलनी, हाथी अरु हनुमान''।
टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान्।

कबीरदास जी ने भी तो प्रेम को ही सब शास्त्रों और दर्शनों का सीमान्त रेखा माना है-

पोथी पढ़-पढ़ जुग मुआ पण्डित भया न कोई।
ढाई अक्षर प्रेम के पढे सो पंडित होई॥

सद्गुरु जी का व्यक्तित्व जितना महनीय है, उसी का प्रतिबिम्ब कृतित्व में भी परिलक्षित होता हैं। साधारण शब्दावली में गम्भीर दार्शनिक विषयों को सरलतापूर्वक विचार और विश्लेषण अपने आप में विशेष है। जीवन की क्षण भंगुरता का वर्णन करते हुए सद्गुरु जी लिखते है :-

रैन गयी पुनि दिवस भया, दिवस गया भयी रात।
कह टेऊँ मन चेत ले आयु ऐसे जात॥

प्रत्येक क्षण मनुष्यों की आयु क्षीण होती जा रही है, मृत्यु निकट आ रही है। अतः सदैव ईश्वर का ध्यान करना चाहिये।

सन्त श्री टेऊँराम जी भक्तियुगीन सन्त समुदाय के प्रतिनिधि सन्त थे। इनका समाज के सुधार के प्रति व्यापक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने की सहज प्रणाली जन-जन को उपकृत कर रही हैं। जो बीसवीं शताब्दी के महापुरुष थे और सिद्ध सन्त परम्परा के प्रतिनिधि थे। परमात्मा के प्रत्यक्षीकरण की विद्या को पुनः जन साधारण के लिये सुलभ करने का उनका प्रयास सदैव स्मरणीय रहेगा। असत्य का अस्तित्व नहीं रहता और सत् का अभाव नहीं होता इसी सिद्धान्त के अनुसार सद्गुरु जी के सत्य सिद्धान्त सदैव संसार को मार्गदर्शन कराते रहेंगे और उनके द्वारा रचित सोलह शिक्षाएं सदैव मार्गदर्शन के रुप में सहायक सिद्ध होगी।

वर्तमान में उनका पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान, जयपुर स्थित है। इस स्थल पर भव्य मन्दिर व समाधि स्थल भी बना हुआ है। आज अनेक श्रद्धालु प्रतिदिन इस पवित्र तीर्थ के दर्शन करते है। प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य की इस महानविभूति को कोटिशः नमन और वन्दन है।

मोहन लाल प्रेम प्रकाशी, हरिद्वार

श्रद्धाञ्जलि

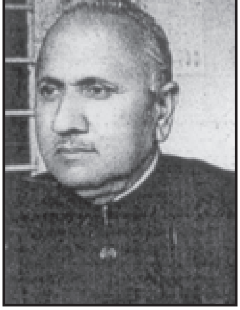

28 नवम्बर 2011 को धर्मवीर सिंह शेखावत का 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अपने चिरपरिचित भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद राजस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री जयबहादुर सिंह शेखावत के वे ज्येष्ठ भ्राता थे। धर्मवीर जी राजस्थान सरकार में सहायक कमिश्नर सहायता विभाग से सेवानिवृत थे। बाल्यकाल से ही संघ के स्वयंसेवक बने थे।

सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित

राम नाम महिमा

राम महातम को लखे, राम महातम गूढ़।
कह टेऊँ बेअंत है, क्या जाने नर मूढ़।।

कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम।।

राम जपन में जीभ पुनि, कर पद दुखे नाहिं।
टेऊँ दाम न लगत कछु, क्यों नहीं जपते ताहिं।।

राम नाम की पत्रका, तात पढ़ो दिन रात।
कह टेऊँ गुरु ज्ञान ले, लखले अपनी जात।।

राम नाम के प्रेम की, पानी पढ़ो हमेश।
कह टेऊँ मन शांति हो, छूटे ताप क्लेश।।

राम नाम उल्टा जपे, बाल्मीक भये पार।
कह टेऊँ तुम ना तरहिं, सुलटा राम उच्चार।।

अर्ध राम का जाप जप, गज का भया उधार।
कह टेऊँ तुम न तरहिं, पूरन राम पुकार।।

राम नाम सत्य वचन पुनि, मधुर न बोलत जोय।
टेऊँ दूजे जन्म में, सो नर गूंगा होय।।

राम भजन जहं होत है, तहां ब्राजत राम।
राम जहां सुख धाम तह, रहे न कलना काम।।

कर माला मन ध्यान धर, रसना से रट राम।
कह टेऊँ इस जाप से, पाओ हरि का धाम।।

कह टेऊँ संसार के, छोड़े सबहीं काम।
जागत, सोवत, राम जप, जो सत्‌चित सुख धाम।।

अंतर बाहर रैन दिन, भूलो ना हरिनाम।
जिह्वा मन वा प्रान से, कह टेऊँ रट राम।।

कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तिंह सुमर के, पाओ मोक्ष द्वार।।

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग।।

राम भरोसा राख तुम और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग।।

प्रेषक-**मोहल लाल प्रेम प्रकाशी**, हरिद्वार

रक्तदान का आयोजन

श्रीराम मन्दिर आन्दोलन में शहीद हुए कार सेवको की दिवगंत आत्माओं की श्रद्धांजलि निमित्त विश्व हिन्दू परिषद जोधपुर महानगर द्वारा 30 अक्टूबर को महर्षि दधीचि रक्तदान योजना प्रारम्भ की गई है, इस योजना के तहत आज जोधपुर महानगर ईकाई के केशव नगर प्रखण्ड, नन्दनवन नगर व सुरसागर प्रखण्ड में रक्तदान कार्यक्रम आयोजित किये गये। आज विभिन्न स्थानों पर आयोजित रक्तदान कार्यक्रम में महिलाओं ने भी रक्तदान करते हुए कार सेवकों की दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की। बजरंगदल महानगर संयोजक महेन्द्र सिंह राजपुरोहित ने बतलाया कि प्रात: 10.00 बजे सन्त अमृतराम, सन्त रामप्रसाद, सुरसागर विधायिका सूर्यकान्ता व्यास, विहिप प्रान्त कार्याध्यक्ष प्रो. भवानी लाल माथुर ने विहिप कार्यालय पर महर्षि दधीचि के चित्र समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रान्त अध्यक्ष वीरेन्द्र भण्डारी, प्रान्त मंत्री भंवरलाल चौधरी, महानगर अध्यक्ष ईश्वरलाल चाण्डक, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रहलाद गोयल, गणपतसिंह राजपुरोहित, रामस्वरूप भूतड़ा ने सन्तों का स्वागत किया व रक्तदान करने आए युवाओं को मंगल तिलक लगाकर, प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। महानगर संयोजक महेन्द्र सिंह राजपुरोहित, कार्यक्रम संयोजक कुमार कृष्ण आचार्य व विक्रान्त अग्रवाल, राजेश दवे ने रक्तदान कर युवाओं का उत्साहवर्द्धन किया।

कार्यक्रम संयोजक कुमार कृष्ण आचार्य व विक्रान्त अग्रवाल ने बतलाया कि रक्तदान योजना के प्रथम चरण में प्रत्येक स्थान पर 60 से 70 कार्यकर्ताओं का रक्त संग्रह किया गया। महिलाओं की सहभागिता 25 प्रतिशत से अधिक रही।

स्वाध्याय, साधना आदि विचार

-स्वामी देवनारायण पुरी

पातंजल योग दर्शन में अष्टांग योग का वर्णन और व्याख्या उपलब्ध है। वहाँ पर द्वितीय अंग नियम में स्वाध्याय भी कहा गया है। चाहे भक्ति में हो, चाहे ज्ञान में हो या योग में हो, स्वाध्याय और साधना के बिना कुछ भी लाभ होने वाला नहीं। इन दोनों के पीछे यदि सत्य की शोध या अपने अन्त:करण की शुद्धता के लिये भावना व्यक्ति के अन्दर है तो वह रजोगुण से सतोगुण की ओर बढ़ रहा है, ऐसा मानना चाहिये। 'सत्यप्रतिष्ठियां वाक्य सिद्धि' कहकर केवल सत्यधारणा के लिये प्रलोभन नहीं दे रहा है, सत्य ही भगवान है, उनको पाने के लिये 'सत्यं परं धिमही' सभी का कर्तव्य है। अपना अध्ययन अर्थात् आत्मा के बारे में अध्ययन के बिना शारीरिक, मानसिक दुर्गुणों की जानकारी नहीं हो सकती और इनसे अनभिज्ञ व्यक्ति पारमार्थिक उन्नति तो दूर, अपने जीवन में सामान्य प्रगति भी नहीं कर सकता। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा-हमारी देश के लोगों की राजनीति का ज्ञान कराने से पहले वेद-पुराण, उपनिषद, गीता, भागवत का ज्ञान से पुष्ट करके धर्मपथ में, सतपथ में चलने के लिये प्रेरणा देनी चाहिए। लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के बाद यह 64 वर्ष पार कर गया है, हमारे लोग धर्म छोड़ अधर्म में, सत्य छोड़ असत्य में आगे बढ़ रहे है।

प्रत्येक व्यक्ति, विशेष रुप से अपने को साधक या भक्त या जनसेवक समझने वाला यदि अपने प्रति जागरुक या सावधान नहीं है तो वह अपने परम लक्ष्य को कभी नहीं पा सकता। यह सिद्धान्त सामान्य, सामाजिक, व्यापारिक, शैक्षिक आदि हर क्षेत्र के लिये उपयोगी है। आत्मा को छोड़ हर जड़-चेतन में परिवर्तन स्वाभाविक है। जो इस परिवर्तन को सृष्टि का सत्य मानकर उससे मोहित न होकर अपने जीवन संग्राम में संलग्न रहता है तथा महापुरुषों के द्वारा निर्दिष्ट अपरिवर्तनीय आत्मा में जुड़कर स्वयं उस अनश्वर का अंग होने की तड़प रखता है, वह अन्त में उसी को प्राप्त हो जाता है।

'धर्मो रक्षति रक्षित:' हमारा उद्घोष है। लेकिन, धर्म क्या है, उसे तो जाने। समाज को जिसके द्वारा सुस्थिर रखा जाता है वह धर्म, धर्म वाह्यिक और आन्तरिक दो प्रकार का है। धर्म आचरण करने से अन्तर पवित्र होता है। जब तक अन्त:करण पवित्र नहीं हुआ, तब तक आन्तरिक धर्माचरण नहीं किया जा सकता। संसार के सम्मोहन से वशीभूत होकर मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही हो जाता है। अप्त:करण पवित्र होने से ही उस पवित्र हृदय में परम वेद्य श्री भगवान की उपलब्धि होती है। ऐसे तो, 'यादृशी भावना यस्य सिद्धि भवति तादृशी।' भगवान बुद्ध भी हमें समझते हैं-अपने संबंध में तुम जो कुछ सोचे हो, तुम वही हुवे हो। भविष्य में भी जो कुछ सोचोगे, वैसे ही बनोगे।

स्वाध्याय से, सत्संग से, अपने प्रति सावधान रहने से अच्छा विचार आता है। व्यक्ति सत्संग से सीखता है, साधना से सत्य को जीवन में उतारता है। अपनी सोच इन दोनों को प्रभावित करता है। संसार के ताप को दूर करने के लिये यह सब आवश्यक है। सोच शुद्ध होने से, सात्विक होने से, श्रेष्ठ होने से अन्यान्य लोग भी इसका अनुसरण करेंगे। आहिस्ते-आहिस्ते समाज में सदाचार के अतिरिक्त दुराचारी लोग रहेंगे ही नहीं। अपने अन्दर ही यदि हीन भावना रही तो समाज का सुधार कैसे करेंगे?

संसार में सामान्य चिन्तन के लोगों का ही निवास अधिक है। इन्हीं सामान्य लोगों को उस यथार्थ सत्य, यथार्थ ज्ञान और यथार्थ प्रेम का संदेश देकर उद्‌बुद्ध करना चाहिये और यही हमारे लिये आवश्यक कर्म समझना चाहिये। सत्य, ज्ञान और प्रेम के संगम की त्रिवेणी में स्नान करने वालों को आनन्दानुभूति होती है। ये तीनों तरंगे सच्चिदानन्द रुपी नदी की धार से उच्छलित तरंगे हैं। वह आनन्द तभी प्रगट होता है जब उस सत को हम साक्षेप रुप से विश्व के आकार में देखने का अभ्यास अपनी सोच को परमात्मा में जोड़कर बना लेते हैं।

इस प्रकार का विचार यदि हम करते हैं तो हमारा वर्तमान दीन-दुर्दशावस्था में सुधार करने में हम सक्षम होंगे। इस पंच भौतिक शरीर में आसक्त होकर अपने स्वार्थ के निमित्त ही कर्मसंलग्न रहने से देश का, समाज का क्या होगा? जैसे वेदादिक शास्त्र स्वाध्याय का विषय है, वैसे ही देश की

शेष पृष्ठ 17 पर......

पाक हिन्दुओं को निकाला गया तो होगा प्रचण्ड आन्दोलन-विहिप

(पाकिस्तान से आये हिन्दुओं के लिए विहिप ने किया यज्ञ-सत्संग का आयोजन)

नई दिल्ली दिसम्बर 25, 2011। पाकिस्तान व बंगलादेश में प्रताड़ित हो रहे हिन्दुओं के प्रति भारत सरकार का उदासीन रवैया हिन्दू समाज के प्रति घोर अन्याय है। विहिप के केन्द्रीय मंत्री डा. सुरेन्द्र जैन ने दक्षिणी दिल्ली के बिजबासन मे रह रहे पाक से आए हिन्दुओं के साथ हवन-यज्ञ व सत्संग में भाग लेकर कहा कि भारत हिन्दू धर्म की जन्म स्थली है इसलिए संपूर्ण विश्व का हिन्दू जब भी संकट में होता है, वह भारत की ओर आशा की दृष्टि से देखता है। उन्होंने मांग की कि पाकिस्तान से पीड़ित और प्रताड़ित होकर आए हिन्दुओं को नागरिकता प्रदान करने की कार्यवाही तुरन्त प्रारम्भ करनी चाहिए। सरकार को चेताया कि यदि किसी ने इन्हे भारत से बाहर करने का दुस्साहस किया तो इसके विरोध में एक प्रचण्ड आन्दोलन खड़ा किया जायेगा।

डा. सुरेन्द्र जैन ने कहा कि पाकिस्तान के हिन्दुओं के प्रति भारत सरकार का नैतिक और संवैधानिक दायित्व बनता है। नेहरू-लियाकत पैक्ट के अनुसार पाकिस्तान व बंग्लादेश में रह रहे हिन्दुओं के हितों की रक्षा करना भारत सरकार की जिम्मेदारी है। आज पाकिस्तान में हिन्दुओं का कत्लेआम हो रहा है, उनकी सम्पत्ति और लड़कियां छीनी जा रही हैं। उन्होंने मांग की कि भारत में पाक से जान बचाकर आए हिन्दुओं के पुनस्थापन की व्यवस्था भारत सरकार को करनी चाहिए। सरकार अपनी जिम्मेदारी समझे या न समझे, विश्व हिन्दू परिषद अपने दायित्व को समझती है। हमने पहले भी पाक से आए हिन्दुओं को यहां बसाया है। अब भी विहिप इसके लिए संकल्पबद्ध है। विहिप इनके लिए रोजी रोटी की व्यवस्था करेगा तथा भारत में इन्हें बसाने हेतु हर संभव प्रयास करेगा। डा. जैन ने यह भी कहा कि मुसलमानों की तकलीफों की झूठी कहानियों पर आंसू बहाने बाली इस सरकार को हिन्दुओं के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए, इनको नागरिकता प्रदान करने की कार्यवाही तुरन्त प्रारम्भ करनी चाहिए।

इस अवसर पर महामण्डलेश्वर स्वामी रामानन्द रमते योगी जी महाराज, स्वामी करुणानन्द जी, स्वामी सुरेशानन्द जी तथा स्वामी राम मंगलदास जी, विहिप दिल्ली के महामन्त्री श्री सत्येन्द्र मोहन, उपाध्यक्ष श्री महावीर गुप्ता, उपस्थित थे।

प्रेषक-विनोद बंसल, मीडिया प्रमुख,
संपर्क- 09810949109, 09899479267

.....पृष्ठ 16 का शेष

वर्तमान अवस्था भी विचारणीय विषय है। आत्मा की मोक्ष साधना तो स्वार्थपरक होगी यदि हम अपने धर्म, संस्कृति और समाज को स्वाभिमान सहित जीने में सहायता नहीं करेंगे। **'आत्मनोमोक्षाय जगद्धितायच।'** हमारा कार्य होना आवश्यक है। शास्त्र में पाया जाता है-

'यो ज्ञातिमनुगृह्णाति दरिद्रं दीनमातुरम्।
स पुत्रपशुर्भिवृद्धिं श्रेयश्चानन्त्यमश्नुते॥

अर्थात्-जो अपने कुटुम्ब देशवासी, दीन दरिद्र आतुर जन-जन की कायामनसावाचा अनुग्रह करता है, वह पुत्र, पशु से समृद्ध होता है और अनन्त कल्याण का अनुभव करता है।

स्वाध्याय और साधना से व्यक्ति जितना जुड़ता जायेगा, उतना ही स्वार्थ से ऊपर उठता जायेगा और 'सर्वे सुखिनः भवन्तु' भाव को अपने अन्तर में अनुभव करते हुये कार्य में लगा रहेगा।

'कर्मन्येवाधिकारस्ते, नियतं कुरु कर्मः, योगः कर्मसु कौशलम्' श्री भगवान का यह सब उपदेश अक्षरशः पालन करने से हम हमारी दुरवस्था को दूर करने में समर्थ होंगे। 'समत्वं योग उच्यते' वाक्य को ध्यान में रखकर चलने से व्यक्ति व समाज उन्नत होगा। ❑

हिन्दुओं का निबाला छीन कर मुसलमानों को देना अस्वीकार

नई दिल्ली जनवरी 01, 2012। केन्द्र की यूपीए सरकार द्वारा हाल ही में घोषित अल्पसंख्यक आरक्षण को सिरे से खारिज करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री चंपत राय ने इसे हिन्दुओं (विशेषकर ओबीसी वर्ग) का निवाला छीन कर मुसलमान व ईसाइयों को देने वाला बताया है। इसके अलावा राष्ट्रीय सलाहकार समिति द्वारा प्रस्तावित सांप्रदायिक हिंसा रोकथाम विधेयक को देश को सांप्रदायिक आधार पर बांटने वाले काला कानून की संज्ञा देते हुए इसके खिलाफ समस्त देशभक्तों से एक जुट होने का आह्वान किया। विहिप दिल्ली के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने इन दोंनों विषयों पर व्यापक जन आन्दोलन चलाने की घोषणा की।

उत्तरी दिल्ली के तरुण एन्कलेव स्थित श्री राधा कृष्ण मन्दिर में पूरे दिन चली बैठकों में विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली के कोने-कोने से उपस्थित पदाधिकारियों ने केन्द्र सरकार के प्रस्तावित सांप्रदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक 2011, धर्माधारित आरक्षण, चीन द्वारा भारत के आर्थिक व सामरिक केन्द्रों पर अतिक्रमण तथा हिन्दू मानबिन्दुओं पर लगातार हो रहे हमलों को विरुद्ध विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली ने रूसी न्यायालय द्वारा श्रीमद भगवद्गीता पर प्रतिबन्ध सम्बन्धी याचिका के खारिज किए जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुए विश्वभर के समस्त हिन्दूद्रोहियों को चेतावनी देते हुए आगाह किया है कि वे बार-बार हिन्दू मानबिन्दुओं के अपमान से बाज आएं।

विहिप दिल्ली के अध्यक्ष श्री स्वदेश पाल गुप्ता, उपाध्यक्ष सरदार उजागर सिंह, श्री महावीर प्रसाद व श्री अमृत लाल शर्मा, महामन्त्री श्री सत्येन्द्र मोहन, संगठन मंत्री श्री करुणा प्रकाश, बजरंग दल सह संयोजक श्री शिव कुमार, मातृशक्ति सहसंयोजिका श्रीमती सिम्मी आहूजा, दुर्गा वाहिनी की संयोजिका कु. अन्जलि सहित लगभग 300 कार्यकर्ता उपस्थित थे।

प्रेषकः-**विनोद बंसल**, मीडिया प्रमुख
इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद

श्रद्धाञ्जलि

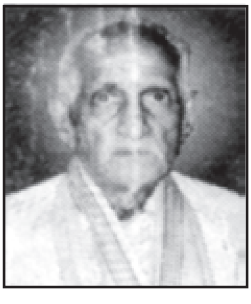

हैदराबाद आंध्र प्रदेश में 18 फरवरी, 1930 में जन्में तुमुलुरि लक्ष्मीनारायण 1946 में रा.स्व. संघ से जुड़े। 6 वर्ष तक (1947-53) प्रचारक रहें। 1953 में तेलगु साप्ताहिक **जागृति** के सम्पादक बनें। सन 1996 में में वि.हि.प. आंध्र प्रदेश के संस्थापक सदस्य व प्रथम महामंत्री बने। कई दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्रों से संबन्धित होने के कारण ही अ.भा. पत्रकार परिषद के सदस्य रहे।

चुनाव सुधार की एक दिशा

-श्री धर्मनारायण शर्मा

बहुत वर्षों तक चुनाव आयोग ऐसे बना रहा जैसे वह अधिकारहीन हो। जब चुनाव आयोग के प्रमुख शेषन बने तो उन्होंने सरकारी जुआ तो उतारकर फेंक दिया और अध्ययन किया कि आयोग के अधिकार क्या है? जैसे ही उन्हें आयोग के अधिकारों का ज्ञान हुआ वैसे ही उन्होंने चुनाव में सुधारों की प्रक्रिया आरम्भ की। वे कुछ वर्षों ही प्रमुख रहे और सेवा निवृत्त हो गए। उन्होंने जो सुधारों का आरम्भ किया उसके पश्चात् आने वाली आयोग की टोली सुधार करती रही।

इतने सुधारों के पश्चात् अभी भी असामाजिक अपराधी तत्व संसद में पहुँच रहे हैं। ये तत्व कैसे रूके इस पर चिन्तन जारी है? कल क्या निकलेगा यह कहना कठिन है? क्योंकि सभी राजनीतिक दलों के अपराधी चुनाव लड़ रहे हैं। अपराधी तत्वों के चुनकर जाने के कारण संसद व विधानसभाओं का स्तर घटा है। एक ओर अपराधी तत्व है तो दूसरी ओर जातिवादी राजनीति समस्या है। अपने देश में यूं तो अनेक वाद चल रहे हैं उनमें कहीं प्रांतवाद तो कहीं भाषावाद अपनी जड़ जमाकर बैठा है। अभिमान कहो या स्वाभिमान कहो, कुछ भी कहो, यह वाद भारत की बीमारी बन गया है। कुछ राजनीतिक दलों के प्राण जातिवाद में ही बसते हैं। बोलने को तो ऊँचे सिद्धान्त बोले जाते हैं परन्तु दल का जीवन टिका है जातिवाद पर। अब तो कुछ दल जनगणना भी जातिवाद पर चाहते हैं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की सरकार ने इन दलों के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। जातिवादी जनगणना से जातिवादी दुर्भीमान और अधिक भड़केगा और भारत का राष्ट्रवाद दुर्बल होगा।

चुनाव आयोग अपराधी तत्वों को हटाने का विचार तो कर रहा है परन्तु जातिवादी प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए कुछ भी नहीं कर रहा है। चुनाव आयोग ने मतदाताओं की सुरक्षा का प्रबन्ध किया है, वोट लूटने वालों को बड़ी मात्रा में रोका है, चुनाव प्रचार का समय भी घटाया है परन्तु जातिवादी चुनाव राजनीति को रोकने हेतु विशेष नहीं किया है। इस समस्या का समाधान चुनाव आयोग को ढूंढना होगा व उसे कठोरतापूर्वक लागू भी करना होगा, तभी इस वाद को कुछ घटाया जा सकेगा।

राष्ट्रवाद बढ़ेगा तो जातिवाद घटेगा। एक तो चुनाव आयोग को राष्ट्रवाद से प्रोत्साहित करना होगा व दूसरा चुनाव प्रक्रिया में साहसपूर्वक सुधार करते हुए पार्टी नामानुसार चुनाव करवाना होगा। इसका अर्थ है पार्टी को वोट देना। इस पद्धति के अनुसार पार्टी चुनाव लड़ेगी, कोई व्यक्ति चुनाव नहीं लड़ेगा। यदि पार्टी के नाम से वोट डाले गए तो जातिवाद लुप्त हो जायेगा और राष्ट्रवाद भारत का श्रृंगार बनकर राष्ट्रीय एकता का संवाहक बनेगा। यह विषय सिरे क्यों नहीं चढ़ रहा है? क्योंकि अधिकतम पार्टियां किसी न किसी वाद में बद्ध हैं।

पार्टी के चुनाव लड़ने पर जहाँ जातिवाद व अन्यवाद तिरोहित होंगे वहाँ कार्यक्रम व सिद्धान्त प्रभावी हो जायेंगे। हर पार्टी को कार्यक्रमों व सिद्धान्तों पर ही अपने को केन्द्रित करना होगा। प्रचार यह जाति वह जाति का न होकर पार्टी की प्रामाणिकता, उसकी कार्यशैली तथा कार्यकर्ताओं का स्तर होगा। जनता इन सब बातों को परखकर ही अपना मत देगी। आगे चलकर विधानपालिका, कार्यपालिका का स्तर भी श्रेष्ठ बनने लगेगा। हाँ! पार्टी में वर्चस्व का संघर्ष अवश्य चलेगा। जिस पार्टी में वर्चस्व युद्ध चलेगा उस पार्टी का ग्राफ अपने आप नीचा होता जायेगा। इसके कारण दलों में अनुशासन बढ़ेगा और उद्ण्डों पर लगाम लगेगी।

आज समाचार पत्रों में विधायक, सांसद को जनता की राय पर बुलाने की चर्चा चल रही है। एक तो वापस बुलाने हेतु जनमत का आकलन कठिन होगा दूसरा जनमत निर्माण करने के लिए धन का खेल चलेगा तथा बार-बार खाली होने वाले चुनाव क्षेत्र को भरने के लिए चुनाव करना पड़ेगा। इसके कारण धन का अपव्यय होगा जिससे देश की आर्थिक अवस्था पर भी असर आयेगा। इसके विपरीत पार्टी के नाम पर ही चुनाव होने लगा तो वह चुनाव क्षेत्र पार्टी का होगा। यदि किसी दल के उम्मीदवार

शेष पृष्ठ 24 पर.....

सभी राष्ट्रवादी शक्तियाँ डॉ. स्वामी जी के साथ

-प्रेम सिंह शेर

नई दिल्ली। संस्थापक अखण्ड हिन्दुस्थान मोर्चा, सदस्य-केन्द्रीय सलाहकार समिति विहिप एवं पूर्व सांसद श्री बी.एल. शर्मा 'प्रेम सिंह शेर' ने हॉवर्ड विश्वविद्यालय के द्वारा प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री एवं भारत के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता डॉ. स्वामी के अध्यापन अनुबंध को समाप्त करने की आलोचना करते हुये कहा है कि यह पश्चिमी ईसाई संगठनों की भारत विरोधी सोच का परिणाम है। डॉ. स्वामी एक प्रखर हिन्दू होने नाते कभी साम्प्रदायिक नहीं हो सकते, उन्होंने वही कहा है जिसे आज पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है।

इस्लामी आतंकवाद पर लिखे डॉ. स्वामी के लेख को श्री प्रेम ने तथ्यात्मक बताते हुए कहा कि पश्चिमी जगत का बुद्धिजीवी वर्ग भी इसे स्वीकार कर चुका है। डॉ. स्वामी का तथ्यात्मक लेखन वही है जिसका दर्द अमेरीका वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के विध्वंस के रूप में देख रहा है। जहाँ तक भारतीय मुस्लिमों के पूर्वज हिन्दू होने का प्रश्न है यह एक ऐतिहासिक सत्य है, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि तलवार के बल पर अरब और अफगान आक्रमणकारियों में हिन्दुओं का धर्मान्तरण कराया था। भारत के अनेक प्रबुद्ध मुस्लिम भी इस बात को स्वीकार करते हैं। सर सैय्यद अहमद खान और डॉ. इकबाल पैत्राक राष्ट्रीयता के आधार पर स्वयं को हिन्दू कहते थे। स्पेन पर अरब आक्रमण का उदाहरण देते हुए श्री प्रेम ने कहा कि वहाँ की ईसाई जनता का भी तलवार के बल पर धर्मान्तरण करा लिया गया था।

श्री प्रेम ने हॉवर्ड विश्वविद्यालय के आरोप को खारिज करते हुए कहा कि पश्चिम के सभी शिक्षण संस्थान वेटिकन सिटी के द्वारा संरक्षित और पोषित होते है। डॉ. स्वामी को ईसाई धर्मान्तरण के विरुद्ध बोलने और सोनिया गाँधी के विरुद्ध जनचेतना पैदा करने के कारण अनुबंध से हटाया गया है। श्री प्रेम ने इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताया और कहा कि पश्चिमी शक्तियाँ प्रत्येक उस आवाज को दबाने का प्रयास कर रही है जो राष्ट्रवाद की प्रवक्ता हैं और भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण चाहती हैं।

श्री प्रेम ने समस्त हिन्दू समाज से आहवान किया कि वह डॉ. स्वामी के पीछे पूरी शक्ति के साथ खड़ा हो ताकि भारत विरोधी शक्तियों को रोका जा सके।

प्रेषक-**राजश्री आहूजा**
अखण्ड हिन्दुस्थान भवन,
एस-562, स्कूल ब्लॉक-2
शकरपुर, दिल्ली-110092

झण्डेवाला मन्दिर में ध्यान-योग शिविर

योग एवं ध्यान के द्वारा शारीरिक रोगों के निदान हेतु झंडेवाला देवी मन्दिर दिल्ली में सात दिवसीय ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया। 20 दिसंबर से 26 दिसंबर तक चले योग शिविर में प्रतिदिन योग चिकित्सक आचार्य श्री विजय जी ने योग-ध्यान की अनेक क्रियाओं का अभ्यास करवाया। जिससे कार्यक्रम में उपस्थित महिला एवं पुरुष लाभान्वित हुए। कार्यक्रम के समापन दिवस पर झंडेवाला टेम्पल सोसायटी के मंत्री श्री रमेश चन्द्र गुप्त, अनिल जी ने श्री आचार्य विजय जी को माता का प्रसाद चुन्नी, माँ झंडेवाली का चित्र एवं श्रीफल देकर सम्मानि किया। श्री अनिल जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि - धर्म के साथ हमें अध्यात्म को जोड़ना होगा। इसी से शक्ति का निर्माण होगा और शक्ति से ही भक्ति की रक्षा की जा सकती है। ❑

सन्त एवं धर्माचार्य चिन्तन बैठक

पूर्वोत्तर प्रान्तों के सन्त धर्माचार्य एवं सत्राधिकारी 18 नवम्बर, 2011 की इस चिन्तन बैठक में उपस्थित थे। पूरे दिनभर चले इस चिन्तन बैठक में सत्राधिकार श्रीश्री भद्रकृष्ण गोस्वामी, श्रीश्री हरिदेव गोस्वामी, श्रीश्री जनार्दन देव गोस्वामी, श्री भवानन्द देव गोस्वामी सहित शताधिक धर्माचार्य उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद के संगठन महामंत्री श्री दिनेशचन्द्र जी, अखिल भारतीय धर्माचार्य सम्पर्क प्रमुख श्री अशोक तिवारी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री उपाध्याय, प्रान्तीय धर्माचार्य सम्पर्क प्रमुख श्री भूमिधर बोरा उपस्थित थे।

चिंतन बैठक में सर्वसम्मति से तीन प्रस्ताव पारित हुए–

प्रस्ताव 1– हिन्दूधर्म के उपासना स्थानों को बंगलादेशीयों द्वारा अनाधिकृत रूप से अधिकार किये जाने के कारण उपासना स्थान एवं उपासकों को बाधा पहुँचाई जा रही है। यह विषय असम की हिन्दुओं के लिए अत्यन्त संवेदनशील है। सभी बंगलादेशीयों ने ईच्छापूर्वक यह कार्य हिन्दू और हिन्दुत्व के ऊपर आक्रमण करना है यह सन्त–सत्राधिकारियों का मानना है।

असम और केन्द्रीय सरकार हिन्दुओं के इन श्रद्धा स्थानों को शीघ्र वेदखल कर हटायें, सन्त समाज का सर्वसम्मति से प्रस्ताव ग्रहण करता है।

प्रस्ताव 2– पृथ्वी के निर्मल जल के मध्य वृहत्तम नदीद्वीप, महापुरूष शंकरदेव एवं माधव देव की मिलन स्थली, सत्र संस्कृति का प्राणकेन्द्र, प्राकृतिक सौन्दर्य का अपूर्व स्थान, नाना जाति और जन जातियों की वासभूमि माजूली ब्रह्मपुत्र की गोद में स्थित यह वासोपयोगी स्थान धीरे–धीरे संकुचित हो रही है। समय रहते यदि वर्तमान अत्याधुनिक प्रयोग के योग्य व्यवहार में यदि माजुली की भौगोलिक सुरक्षा नहीं दी जाती है, तो असम और असमवासियों की श्रेष्ठ सम्पदा सम्प्रति 31 सत्र और सत्रों के साथ ही सत्र संस्कृति का बचना सम्भव होगा।

अतएव शीघ्र ही माजूली के भौगोलिक संरक्षण देने के लिए केन्द्र सरकार से सन्त समाज सर्वसम्मति से यह मांग करता है।

प्रस्ताव 3– माजूली विश्व के ऐतिहासिक क्षेत्र के रूप में स्वीकृत प्राप्त कर सकता है, तत्निमित्त आवश्यक व्यवस्था को युद्धस्तर की तत्परता के साथ करने के लिए केन्द्रीय सरकार का सांस्कृतिक मंत्रालय और आवश्यकीय संबंधित विभागों के साथ–साथ असम सरकार से ऐसी व्यवस्था तुरन्त करने की मांग करते हुए सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव ग्रहण करती है। ❑

स्वामी राघवानन्द के अमृत महोत्सव पर हुए अनेक सेवा कार्य

नई दिल्ली दिसम्बर 25, 2011। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष म.म. स्वामी राघवानन्द जी महाराज के अमृत महोत्सव पर अनेक सेवा कार्य किये गए। तीन दिन तक चले इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग एक हजार लोगों के स्वास्थ्य परीक्षण, रोटेरी क्लब के सहयोग से अनेक लोगों द्वारा रक्तदान तथा दर्जनों लोगों की नेत्र जांच कर चश्मा भी वितरित किए गये।

कार्यक्रम के संयोजक विहिप दिल्ली के उपाध्यक्ष श्री ब्रजमोहन सेठी ने बताया कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्वामी राघवानन्द जी महाराज के 75वे जन्म दिवस को अभाव ग्रस्त कल्याण दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर लगभग एक दर्जन अभाव ग्रस्त कन्याओं का विवाह भी किया गया। तीन दिनों में अमरकण्टक से बाबा कल्याण दास जी महाराज, पटियाला से पधारे स्वामी आत्माराम जी, विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री दिनेश चन्द्र, प्रान्त संगठन मंत्री श्री करुणा प्रकाश, श्री भूषण लाल पारासर, श्री रजनीश गोयन्का सहित अनेक सतों महन्तों व समाज सेवियों ने भाग लिया तथा गुरू रामराय उदासीन आश्रम के प्रमुख तथा अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के संचालक स्वामी राघवानन्द के सुखद, सफल व शतायु जीवन की कामना की।

प्रेषक–विनोद बंसल
मीडिया प्रमुख

राष्ट्रधर्म पालन की सात्विक श्रद्धा

-डॉ. उषा खोसला

मनुष्य की श्रद्धा उसके स्वभाव के अनुसार ही होती है। राजसिक श्रद्धा वाला मनुष्य सकाम कर्म में प्रवृत्त होता है। उसका हर कर्तव्य केवल प्राप्तव्य ही होता है। यदि योगयता के अनुसार कर्म करने के बाद परिणाम अनुकूल होने पर क्षणिक सुख मिलता है। यदि परिणाम प्रतिकूल रहा तो ऐसा सकाम कर्मी राजसिक स्वभाव वाला व्यक्ति क्रोध से भर जाता है।

यदि परिणाम अनुकूल भी रहे तब लोभ बढ़ता है। लोभ और क्रोध दोनों ही मन के विकार हैं। मन की शांति को छीन कर मन को बेचैन कर देते है। आधुनिक समय का समाज रजोगुणी श्रद्धा में जीवन बिता रहा है, इसलिये भय, क्रोध, चिन्ता तथा तनाव के घने बादल मंडरा रहे है।

तमोगुणी श्रद्धा तो रजोगुणी श्रद्धा से भी भयानक है। तमोगुणी तो सतोगुणी ओर रजोगुणी की बात तक नहीं सुनना चाहता। तमोगुणी मनुष्य आसुरी सम्पदा के साथ जीता है। आलस्य, प्रमाद, चोरी डकैती, व्यभिचार, बलात्कार, नशाखोरी, दूसरों के अधिकार को छीनना इत्यादि अनेक प्रकार के अवगुणों में वह जीवन यापन करता है। उसे तो भोग ही मिलने चाहिये। वह भी बिना पुरुषार्थ के। रजोगुणी तथा तमोगुणी मनुष्य को सात्विक गुण विकसित करने की आवश्यकता है।

सात्विक गुण को विकसित करने की कई विधियों का हमारे शास्त्र वर्णन करते हैं। यदि मनुष्य प्रज्ञावान होकर राष्ट्रधर्म के पालन करे उसे किसी और विधि तथा नियम का पालन नहीं करना पड़ता। ऐसा परम पुरुषार्थी निष्काम भाव से यदि अपने राष्ट्र को समर्पित हो जाये तो उसे किसी तप, जप, मंत्र, तीर्थ, व्रत की आवश्यकता नहीं है। उसका अपना राष्ट्र और उसके हितों की रक्षा करना ही उसका तीर्थ, तप, जप, माला तथा स्वाध्याय है। भारतवर्ष के शास्त्रों ने भावना को क्रिया से अधिक ऊँचा स्थान दिया है। यदि मनुष्य राष्ट्र भावना से भावित होकर अपना तन, मन, धन उसी को अर्पित कर दे तो वह राष्ट्र ऋण से उऋण होने के साथ-साथ दिव्य लोक की भी प्राप्ति कर सकता है।

वर्तमान समय में समाज में भावना का ही अभाव हुआ है। भावना के अभाव में मनुष्य स्वार्थी हो जाता है। वह अपने निजी स्वार्थो में लिप्त रहने के कारण भोगों का दास बन जाता है तथा राष्ट्र धर्म का पालन नहीं कर पाता। सात्विक वृत्ति वाला मनुष्य ही राष्ट्र का सेवक हो सकता है। जो राष्ट्र का सेवक है उसकी वृत्ति सात्विक तथा दिव्य है। वह बाहर से राष्ट्र सम्बन्धी कार्य करता हुआ भी अन्तर चेतना से भगवान की प्रमुख धारा से जुड़ा रहता है। ऐसे व्यक्ति का योग तथा क्षेम भगवान स्वयं वहन करते हैं। उसकी हर आवश्यकता भगवान पूर्ण करते हैं तथा उसकी सब प्रकार से रक्षा करते हैं। ऐसा साहसी ही कर्मवीर तथा धर्मवीर है। ऐसे कर्मयोगियों की ही भारत वर्ष को आवश्यकता है। ऐसा निष्काम कर्मयोगी अपनी तिजोरी भरने के स्थान पर अपने राष्ट्र की समृद्धि तथा शांति को देखने का इच्छुक होता है। अपने घर में ताला लगाने से पहले वह अपने राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा तथा सुरक्षा करने के लिये चिन्तित रहता है। ऐसा महामानव अपना लोक तथा परलोक दोनों ही संवार लेता है तथा भगवान के दिव्य आशीर्वाद की शीतल छाया में वास करता है। ऐसे परम हितैषी राष्ट्र भक्त पर भारत माता भी गर्व करती है।

भावनात्मक विकास न होने के कारण मनुष्य भीतर से खाली-खाली अनुभव करता है। उसे ऐसा लगता है कि वह किसी से बिछुड़ गया है क्योंकि भीतरी चेतना को विकसित नहीं कर पाता। भौतिकता से चेतना का विकास नहीं होता। उसके लिये अध्यात्मवाद की उपजाऊ भूमि चाहिये। उसमें राष्ट्र सेवा के बीज डाले जायें। भक्ति, त्याग तथा श्रद्धा के जल से सींचा जाये। स्वार्थ की कांटेदार झाड़ियों को उखाड़ा जाये तभी जीवन में उत्साह, उमंग वीरता तथा कर्मठता का वृक्ष लगेगा। इस प्रकार के नवयुग के नये वृक्ष ही भारत वर्ष को एकता, अखंडता तथा समृद्धि के गौरीशंकर पर ले जा सकते है।

मनुष्य अपने अन्तरमन की वाणी सुने उसे क्या करना

चाहिये तथा वह क्या कर रहा है? मनुष्य अपने अन्तरमन को टटोले कि कहाँ त्रुटि हो रही है। उसने जीवन की पवित्रता खोकर अश्लीलता का मार्ग क्यों पकड़ लिया। सांस्कृतिक प्रदूषण के बढ़ाने से क्यों वह राष्ट्र का विनाश करने पर तुला हुआ है। मनोविनोद, प्रदर्शन तथा बाहरी चकाचौंध से राष्ट्र महान नहीं बन सकता। राष्ट्र की रीढ़ अध्यात्मवाद है। राष्ट्र के मूल्यों को समझे। राष्ट्र की महान दिव्य परम्पराओं से न कटें। वर्तमान समय में राष्ट्रवासियों ने ऋषि परम्परा से दूर होकर अपने जीवन से तथा अपने राष्ट्र से बहुत कुछ खो दिया। खोई हुई सम्पदा तथा मानवता के मूल्यों को वापिस लाना होगा।

मनुष्य के भीतर प्रकृति का अंश है। इसलिये प्रकृति उसे अपनी ओर आकर्षित करती है। इसलिये जड़ इन्द्रियों द्वारा वह संसार के भोग भोगना चाहता है। लेकिन उसके भीतर भगवान की चेतन शक्ति भी है। इसलिये जब वह राजसिक तथा तामसिक जीवन जीता है, स्वयं को भोगों में लिप्त करता है तो भीतर से एक आवाज भी आती है कि यह तुम क्या कर रहे हो? इस पाप के मार्ग को त्यागो और सोई हुई आत्मा को जगाकर परम पवित्र बनो। अपने कर्तव्य को पहचानो। जो करणीय है उसे करो। अकरणीय है उसको क्यों कर रहे हो? यदि मनुष्य इस आवाज को अनसुनी कर देता है तो वह विषय विकारी का जीवन जीता है। यदि आवाज को सुने उसका विश्लेषण करे तो ठीक दिशा पर अग्रसर होता है। पाश्चात्यवाद की हवा ने पूर्व के लोगों को अन्तरमन की वाणी न सुनने के मार्ग पर लगा दिया। यही विष पूर्व की रीढ़ को दुर्बल कर रहा है। पश्चिम से पूर्व को तकनीक सीखनी है लेकिन अपने अध्यात्मवाद को खोकर नहीं। भौतिक स्तर पर मानव जाति के लिये पश्चिम की देन है और अध्यात्मवाद पूर्व देन है। दोनों का संतुलन बनाकर मनुष्य जीवन में आगे बढ़ता रहे तो मनुष्य की भौतिक आवश्यकतायें भी पूर्ण होती रहेंगी और आध्यात्मिक स्तर पर भी वह विकसित हो जायेगा। यह संतुलन खोता जा रहा है। यही देश का दुर्भाग्य है।

भौतिक विकास की भागमभाग तथा सुख सुविधा की वस्तुओं के अंबार तो इकट्ठे हो गये। लेकिन मनुष्य भीतरी चेतना से कट गया। यही कारण है कि सबकुछ होते हुए भी मनुष्य भीतर से रूग्ण है। मानसिक विकारों के कारण शरीर से भी मनुष्य रोगी हो गया है। नित्य निरंतर बदलाव देखने का शौकीन बनता जा रहा है मनुष्य। हर सप्ताह नये चित्रपट तथा दूददर्शन पर नया धारावाहिक नाटक देखने को न मिले तो मनुष्य के मन में ऊब पैदा हो जाती है। छोटे-छोटे बच्चे कहते सुने जाते कि हम बोर हो गये हैं। यह बोरियत क्या है? यह नये जमाने की नयी बीमारी है। हर समय नया बदलाव चाहिये। नये ढंग की वेशभूषा हो। प्रति दिन नया फैशन हो। हर दिन नया साज सज्जा का सामान हो। जब वह नहीं मिल पाता तो बोर होने की बीमारी आरम्भ हो जाती है। इन सब बीमारियों का एक ही उपचार है अध्यात्मवाद तथा राष्ट्रभक्ति। जिस दिन ये तत्व जीवन में उतर आयेंगे उसी दिन जीवन मंगलमय बन जायेगा।

हैवर्ड, सी.ए., 94544, यू.एस.ए.

संगीतमय सुन्दकांड पर झूमें भक्तजन

हिसार 8 जनवरी। मकर सक्रान्ति के पावन उपलक्ष्य को लेकर श्री हनुमत शक्ति जागरण समिति हिसार व श्री बांके बिहरी श्री सुन्दरकाण्ड पाठ समिति की ओर से स्थानीय श्री सनातनधर्म हनुमान मंदिर के प्रांगण में संगीतमय श्री सुन्दरकाण्ड के पाठ का आयोजन किया गया। भजन गायक अरविंद गुप्ता व उनके साथियों द्वारा जनकल्याणार्थ किए गए इस पाठ में कड़ाके की सर्दी में भी सैंकड़ों लोगो ने भक्ति और शक्ति का आनन्द लिया। देर सांय तक अरविंद गुप्ता के भजनों पर लोग भगवान के दरबार में भक्तिमय रस में झूमते रहे। इस अवसर पर सुदर्शन सेवा समिति की ओर से भगवान का भव्य दरबार सजाया गया था। भक्तजनों के लिए लंगर की व्यवस्था भी की गई थी। इस अवसर पर विहिप के विजय शर्मा, अनिल गोयल, रविन्द्र गोयल, जितेन्द्र सोनी, विश्वनाथ मात्रसामियां, कपिलवत्स, संदीप बंसल, रामचन्द्र गुप्ता, गोविंद मधु, नरेन्द्र वशिष्ट, महेन्द्र सिंगल, ओमप्रकाश फोगाट, मुरारीलाल बंसल, स्वामी लोकेशानन्द, अचार्य सन्तोष शास्त्री आदि उपस्थित रहे।

❑

मजहब के आधार पर बांटना देश की अखण्डता पर संकट

केन्द्रीय सरकार द्वारा सरकारी नौकरी में 4.5 प्रतिशत अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने का विश्व हिन्दू परिषद जोधपुर महानगर ने कड़ा विरोध प्रकट करते हुए, दिनांक 23 दिसम्बर 2011 सायं आखलिया चौराहा पर केन्द्रीय सरकार की इस घोषणा की प्रतियाँ जलाई। आयोजित विरोध प्रकट कार्यक्रम में ओबीसी से जुड़े अनेक समाज के पदाधिकारियों ने भी प्रतिनिधि के रुप में भाग लेते हुए, केन्द्रीय सरकार के इस निर्णय पर गहरा आक्रोश व्यक्त किया।

विहिप के महानगर अध्यक्ष ईश्वरलाल चाण्डक ने बतलाया कि विहिप बजरंगदल के कार्यकर्ताओं के साथ ओबीसी वर्ग के माली समाज, रावणा राजपूत समाज, प्रजापत समाज, सुथार समाज, सेन समाज, स्वर्णकार समाज, दर्जी समाज सहित अनेक समाज के पदाधिकारियों ने केन्द्र सरकार की तुष्टिकरण नीतियों का विरोध करते हुए मंत्रीमण्डल के निर्णय की प्रतियां जलाई।

विरोध प्रदर्शन पश्चात् कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए विहिप महानगर मंत्री जगदीश पुरोहित व बजरंगदल महानगर संयोजक महेन्द्र सिंह राजपुरोहित ने कहा कि केन्द्रीय सरकार आगामी चुनाव को ध्यान में रखते हुए अपने वोट बैंक के लिये हिन्दू समाज के बेरोजगार युवकों की पीठ पर छुरा भोंक रही है, जिसे सहन नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि देश को मजहब के आधार पर बांटना देश की अखण्डता को खतरा है।

रावणा राजपूत समाज के दलपतसिंह परिहार, जयसिंह चौहान, माली समाज के राजेन्द्र कुमार गहलोत, सेन समाज प्रमुख राजू चांचलवा, रामचन्द्र रजनीवाल, सुथार समाज प्रमुख राणा राम भदरेचा, स्वर्णकार समाज के शिवकुमार सोनी, दर्जी समाज के प्रमोद वर्मा, प्रजापत समाज के दशरथ प्रजापत व कुमार कृष्ण आचार्य आदि ने सामूहिक रुप से केन्द्र सरकार से निम्न बिन्दुओं पर मांग की।

1. ओबीसी के कोटे में एक प्रतिशत भी अल्पसंख्यक को नहीं देने देंगे।

2. हर हिन्दू को रोजगार नही तो अल्पसंख्यक को रोजगार क्यों?

3. एस.सी/एसटी व ओबीसी कोटे में अल्पसंख्यक को सम्मिलित नहीं होने देंगे।

विहिप एवं बजरंगदल ने केन्द्र सरकार से तत्काल इस निर्णय को वापस लेने की मांग की।

प्रेषक–कुमार कृष्ण आचार्य

.......पृष्ठ 19 का शेष

के विरुद्ध जनमत बना है तो दल अपने विधायक या सांसद को बुला लेगी व उसके स्थान पर दूसरे व्यक्ति को भेज देगी। इससे दल का वर्चस्व बढ़ेगा तथा सांसद या विधायक गलत कार्य नहीं करेंगे क्योंकि उसे ज्ञात रहेगा कि यदि मैंने कदाचार किया तो दल मुझे निरस्त कर देगा। इसके साथ ही बार–बार चुनाव खर्च से भी मुक्ति मिलेगी। दलानुसार चुनाव प्रक्रिया चली तो भ्रष्टाचार रूकेगा, जातिवाद व अन्यवाद मिटेगा, जनता के कार्य होंगे व अपराधी तत्वों तथा धन्नासेठों का वर्चस्व हटेगा और सबसे बड़ा लाभ होगा राष्ट्रवाद फलेगा व भारत का लोकतंत्र शुद्ध–विशुद्ध बनकर विश्व का आदर्श बनेगा।

केन्द्रीय मंत्री, विश्व हिन्दू परिषद

श्रद्धांजलि सभा

जोधपुर 07 नवम्बर। 1966 में दिल्ली में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित गौरक्षा आन्दोलन में शहीद हुए जोधपुर के झूमरलाल आसोपा का स्मृतिदिवस 7 नवम्बर को श्रद्धांजलि सभा के रूप में मनाया। जिसमें, सन्त अमृतराम, सन्त तारूनाथ, आसोपा परिवार, सुरसागर विधायिका शहर विधायक, विहिप के महानगर अध्यक्ष ईश्वरलाल चाण्डक, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गणपतसिंह राजपुरोहित, पूर्व प्रान्त संयोजक अशोक दवे, जिला मंत्री भागीरथ चौधरी, उपाध्यक्ष अनन्तराम टाक सहित अनेक वरिष्ठजनों ने आसोपा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर जोध पुर के विधायक व विधायिका ने आसोपा के चौराहे को विधायक कोटे से नवनिर्माण करने की घोषणा की।

प्रातः 11.00 पर बलिदानी झूमरलाल आसोपा के पुत्र डॉ. पुरुषोत्तम ओसापा ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। महानगर सहसंयोजक विक्रम परिहार द्वारा गीत व परिचय करवाया गया। श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए विहिप के प्रान्त कार्याध्यक्ष प्रा. भवानलाल माथुर ने कहा कि गौमाता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले आसोपा का यह बलिदान भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने विश्व में गाय माता के महत्व को प्रतिपादित करते हुए गौ सेवा को ईश्वर सेवा बतलाया। प्रान्त मंत्री भंवरलाल चौधरी ने सन्तों का स्वागत किया।

कुमार कृष्ण आचार्य द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। ❑

जोधपुर। अयोध्या में रामजन्म भूमि आंदोलन में शहीद हुए प्रो. महेन्द्र नाथ अरोड़ा का स्मृति दिवस विश्व हिन्दू परिषद द्वारा मनाया गया, जिसमें महामण्डलेश्वर रविशरणानन्दगिरि, सन्त अमृतराम, सन्त तारूनाथ, अरोडा की धर्मपत्नी श्रीमती सुमति अरोडा, विधायिका श्रीमती सूर्याकान्त व्यास, शहर विधायक कैलाश भंसाली, दुर्गावाहिनी प्रदेश संयोजिका, संघ के प्रान्त प्रचारक, विहिप के महानगर अध्यक्ष, जिला मंत्री सहित अनेक वरिष्ठजनों ने अरोडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

महामण्डलेश्वर रविशरणानन्दगिरि ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। पं. राजेश दवे द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण व शंखनाद से किया गया। श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए विहिप विहिप के प्रान्त कार्याध्यक्ष प्रो. भवानलाल माथुर ने कहा कि कार सेवकों का बलिदान कभी निष्फल नही जायेगा, अयोध्या में भगवान श्रीराम की जन्मस्थली पर भव्य मन्दिर निर्माण होकर रहेगा। अयोध्या में भव्य मन्दिर का पुन:निर्माण ही कार सेवकों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। प्रान्त मंत्री भंवरलाल चौधरी ने सन्तों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मदन सुथार द्वारा किया गया। अन्त में कार्यकर्ताओं को राममन्दिर के पुनः निर्माण कर संकल्प करवाया।

–कार्यालय प्रमुख

रामलला के दर्शनार्थियों से सभ्यव्यवहार किया जाय

- स्वामी नित्यगोपाल दास, अध्यक्ष राम जन्मभूमि न्यास

अयोध्या 6 जनवरी। श्रीराम जन्मभूमि न्यास अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास ने श्रीराम जन्मभूमि पर दर्शन को लेकर स्थानीय सुरक्षा कर्मियों द्वारा श्रद्धालुओं के साथ किए जा रहे दुर्व्यवहार पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि राम भक्तों के दर्शन हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए। सुरक्षा के नाम पर आतंकियों जैसा व्यवहार आचरण के विपरीत है।

श्री दास श्रीराम जन्मभूमि पर राम लला का दर्शन करने वृन्दावन के श्री काठिया बाबा आश्रम, रमणरेती से पहुंचे आधा दर्जन काठिया संतों को रोके जाने पर नाराजगी व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने बताया संतों की अपनी परम्परा है उसी परम्परा के अन्तर्गत कोई कमर में मूंझ का आंडबन्द लगाता है कोई डोरी पहनता है और कोई काठ का आंडबन्द लगाता है। काठिया संतों द्वारा आंडबन्द काठ का पहना जाता है। रामलला के दर्शन के समय सुरक्षा कर्मियों ने उनके आंडबन्द पहनने मात्र पर दर्शन करवाने से मना कर दिया। उन्होनें कहा श्रीराम लला का दर्शन करना प्रत्येक संत-धर्माचार्य और राम भक्तों का मौलिक अधिकार है। संत परम्परा पर किसी को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। आये दिन श्रद्धालुओं द्वारा यह शिकायत मिलती आ रहा है कि श्रीराम जन्मभूमि पर तैनात सुरक्षा कर्मियों द्वारा उनसे दुर्व्यवहार किया जाता है।

उन्होंने कहा सुरक्षा के नाम पर आतंकियों जैसा व्यवहार उचित नहीं है। शासन प्रशासन सुरक्षा मानकों में सधार लाये और ऐसे सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया जाये जिन्हें व्यवहारिक ज्ञान हो, क्योंकि अयोध्या एक धार्मिक और पौराणिक नगरी है देश के कोने कोने से विभिन्न पंथ और सम्प्रदायों के आचार्य, महामण्डलेश्वर, श्रीमहंत, महंत तथा विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के राम भक्त अपने आराध्य का दर्शन पूजन करने आते हैं यहाँ से वह ऐसा संदेश न लेकर जाये जो अयोध्या की गरिमा के विपरीत हो।

काठिया संत केशव दास ने बताया कि हमारे साथ गोपाल दास, ललिता शरण, प्राण वल्लभ, मदनदास, गोपाल दास त्यागी आदि संत थे। वृन्दावन से चल कर मकरसंक्रान्ति का स्नान करने गंगासागर जा रहे थे। अयोध्या प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली है इस कारण दर्शनार्थ यहाँ आये लेकिन सुरक्षा के नाम पर हम सबके साथ किया गया व्यवहार दुखद रहा। आत्म पीड़ा पहुंची है भगवान राम लला सुरक्षा अधिकारियों को सद्बुद्धि दे।

मतान्तरण से राष्ट्रांतरण बढ़ता है इसे प्रतिबन्धित करें

नई दिल्ली 8 जनवरी, 2012। मतान्तरण से राष्ट्रांतरण बढ़ता है। मतान्तरण पर पूरी तरह रोक लगानी होगी क्योंकि इसी से राष्ट्रद्रोही पैदा होते हैं। गौवंश की हत्या, धर्म स्थलों पर हमले व भारतीय संस्कृति का उपहास इत्यादि सभी समस्याएं इसी के कारण पनपती है। विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मंत्री श्री जुगल किशोर ने कहा कि मतान्तरण के कारण ही भारत के 48 जिले मुस्लिम बहुल तथा 23 जिले ईसाई बहुल हो गये है। पूर्वोत्तर के पांचों राज्य व पश्चिम बंगाल का बहुत बड़ा हिस्सा आज राष्ट्रद्रोहियों का अड्डा बन गया है। मतान्तरण के कारण ही देश में विदेशी घुसपैठ, नक्सलवाद, माओवाद व जेहादी आतंकवाद पनप रहा है। भारत सरकार को इस पर अविलम्ब अंकुश लगाना होगा अन्यथा इसके और भी घातक परिणाम देश को भुगतने पड़ सकते हैं।

पूर्वी दिल्ली के कृष्णा नगर के श्री रघुनाथ मंदिर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में **धर्मांतरण एक राष्ट्रीय संकट एवं उसका समाधान** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विहिप के धर्म-प्रसार विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स्वदेशपाल गुप्ता ने कहा कि हिन्दू संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन होते हुए भी उसके शाश्वत सिद्धांत आज भी राष्ट्र का मार्ग-दर्शन करने में पूरी तरह सक्षम है। धर्मांतरण रूपी राक्षस के समूल नाश के लिए संकल्प लेना होगा तथा राष्ट्र की रक्षार्थ केन्द्र सरकार को मतान्तरण को पूरी तरह प्रतिबन्धित करना होगा।